HARI BHAJAN..

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. छोर पता न अन्तहीन हैं। 1

2. कुछ पल के मेहमा बने हैं। 1

3. मन तुझमें मैं ईश लगाऊँ। 2

4. हरि मैं छोड़ तुझे कित जाऊँ। 2

5. हरि बिना कृपा ना कुछ होई। 3

6. भटक रहा चहुँ ओर जगत के। 4

7. भज मन हरि छवि मन को भाई 4

8. प्रभु तुम बिन मो कुछ सुहावे। 5

9. रोना चाहा रो ना पाया। 6

10. टूटे तार अधूरे स्वर है। 6

11. हरि बिन मोहि कुछ ना सुहावे। 7

12. हरि तुम बिन जियरा नहिं लागे। 8

13. मेरे मोहन मुझ से बोलो। 8

14. राख अपनी शररा में मोहन। 9

15. तुम्हारे दास हम स्वामी। 10

16. अपने पीछे मुझे ले चलो। 10

17. यदि कृपा ईश की हो जाये। 11

18. तू जी हरि पर ही धरे। 12 19. तुम बिन मेरा जीवन सूना। 12

20. चल अकेला ही चले चल। 13

21. आशाओं में है जीते हम। 14

22. आज गाऊँ गीत मैं क्या। 14

23. बहते जाते अनन्त में हम। 15

24. अश्रु पी पी कर धरा यह। 16

25. बात कर आकाश की। 1626. चलते हैं चलते चलते। 17

27. तुम को प्राण भजें यह हर दम। 18

28. मैं थका हारा मुसाफिर। 18 29. साधना क्या चाहती है। 19

30. कितने रोये ना दिशा मिली। 20

31. अपनी इच्छा के घेरे में। 20

32. छूट रहे हैं सारे रिस्ते। 21 33. घूमना चाहूँ मैं नभ में। 21

34. घूमा फिरा पढ़ा सुना हूँ। 22

35. नमन तुझे करते है ईश्वर। 22

36. जोगन हुई प्यार में तेरे। 23

37. कितनी गलियाँ जीवन जाता। 23

38. रोए हम इतना ही था। 24

39. नीर आँखों से बरसते। 24

40. पथ यहाँ तुमको मिलेगा। 25

41. मन किसकी करे प्रतीक्षा। 25

42. मन लगता है कहीं नहीं। 26

43. भागा बहुत तुम्हारे पीछे। 26

44. हरि हम तेरे ही गुन गायें। 27

45. यहाँ पर है कैसी घुटन। 27

46. बांसुरी तुम अपनी बजाओ। 28

47. हम भटकते हैं यहाँ पर। 28

48. दो पल को हम मिलते। 29

49. सुर अपने गुनगुना कर। 29

50. चले ही चले जग में। 3051. तेरा जीवन तुझे समर्पित। 30

52. ईश कृपा करना तुम हम पर। 31

53. वंशी की धुन पर होऊँ मगन। 31

54. क्यों यहाँ उलझे हुए है। 32

55. ईश चरणों में पड़े हम। 32

56. अँखियां थकी निहारूँ तुझ को। 33

57. तू ही सर्जक तू ही दाता। 33

58. रंग अनेकों है जगत में। 34

59. मन हरि भजन करो सुख पाओ। 34

60. ज्ञान ईश्वर तुम हमें दो। 35

61. मैं सेवक तुम मेरे स्वामी। 35

62. भज ले मन राधे गोविन्दा। 36

63. चलने में होना तृप्त यहाँ। 36

64. चल उड़ चल उस पार गगन के। 37

65. जीवन मेरा अजब कहानी। 37

66. हे ईश कृपा करना हम पर। 38

67. मन मन्दिर की ज्योति जलाऊँ। 38

68. हम हारे चलकर थके यहाँ। 39

69. मैं हूँ शरण तुम्हारी ईश। 39

70. भूत प्रेत चहुँ ओर डोलते। 40

71. यह पागलों की दुनिया। 40

72. अपनी इच्छाओं में फंस कर। 41

73. चरणों में तेरे पड़ रोता। 41

74. भज मन राम नाम सुखदाई। 42

75. चलूँ मगर मैं पथ न जानूं। 4276. मैं हूँ सदा चलता रहा। 43

77. भज लो मन राधे गोंविन्दा। 43

78. बढ़ रहा तुम्हारी ओर प्रभु। 44

79. खोजूँ तुम को दीप जला दो। 44

80. जी लें हम छवि को हृदय बसा। 45

81. नैनन में बस हो छवि तेरी। 45

82. चल उड़ चल उस पार गगन के। 46

83. हम मिले तुमको दिखायें। 46

84. तेरे द्वारे हमें सभालो। 47

85. पार लगा दो नैया राम। 47

86. जगत के रचैया। 48

87. बिनु हरि कृपा नहीं कुछ होई। 48

88. ले चल नाविक धीरे-धीरे। 49

89. बोलो अंखियां नीर बहाये। 49

90. इस मन को कैसे समझाऊँ। 50

91. सुख की खातिर हम भटक रहे। 51

92. रोता हूँ बस देख लो तुम। 51 93. डूबा दिल गम में जाता। 52

94. दुख हरन हरि भजन कर। 52

95. गुन तेरे गाते रहें सदा। 53

96. हरि इस जगत में बहुत भटका। 54

97. निशदिन तेरी छवि को निरखूं। 54

98. तुम बिन नही कोई सहारा। 55

99. मुझ पर दया करो हे हरि तुम। 56

100. रोते रोते ही हमारी। 56

101. जय भोले बाबा तेरी। 57

HARI BHAJAN

1

छोर पता ना अन्तहीन है, हरि भज बिन उस क्लेश मिटे ना।

दीपक बन मग करे प्रकाशित, जपो उसे तू भूल उसे ना।

मां की ममता को शिशु चाहे, रो-रो कर बस उसे पुकारे।

वहीं संभाले और न कोई, ज्ञान नहीं है पार उतारे।

विरह अग्नि में जले रात-दिन, गिरें नयन से आंसू झर-झर।

जो दीपक इस तन में जलता, पथ उसका ना छोड़ पल भर।

रंग पलटती है यह दुनिया, पल दो पल का सब है मेला।

बीते जाते सारे यह पल, बसा हिया ना कर मन मैला।

काहे का हम गर्व करें है, समझ संग ना साथ कोई है।

सांस-सांस में उसे रमा लो, जायेंगे न खबर कोई है।

प्यार न खोवे इन अंखियों से, सब जग यह उसकी लीला है।

खो कर उसको तड़े जग में, सारे जीवन की पीड़ा है।

आशाओं के लिये गुवारे, इस जग में हम घूम रहे है।

टूट रहे यह रोते हरपल, ईश तुझे हम भूल रहे है।

तू ही पार करेगा नैया, हृदय वसा ले अश्रु चढ़ा दे।

सर्जक पालक सारे जग का, जान समर्पित निज को कर दे।

2

कुछ पल के मेहमा वने है, जो करना है वह कर ले।

हरि बिन चैन मिलेगा नाहीं, विछुड़े हरि को तू जप ले।

जन्मों से हम भटक रहे है, नहीं हरि से नजर मिली।

जगत धूल को रहे चाटते, नहीं विरह में हाय जली।

कैसे पाँऊ मन समझाऊँ, ज्ञान दया बिन ना पाऊँ।

अंधियारे में दीप जला दो, यही विनय करता जाऊँ।

अबल यहाँ हम शक्तिपुंज तू, इस जग का प्रभु कर्ता तू।

अंखियां मेरी भर भर आये, दे संबल जीवन धान तू।

कहाँ हमें जाना ना जाने, हमने तो तुमको माना।

बनो न निष्ठुर मेरे छलिया, नैया पार लगा देना।

3

मन तुममें मैं ईश लगाऊँ, जपते-जपते खो जाऊँ।

जीवन की बस चाह यही है, चरणों में अश्रु चढ़ाऊँ।

बालक हूँ मैं अज्ञानी प्रभु, जग में भटक-भटक जाऊँ।

मेरे देव नहीं रुठो तुम, शरण तुम्हारी मैं आऊँ।

नयनों में प्रभु बसे तुम्ही हो, कभी विलग ना हो पाऊँ।

डर हे ईश्वर मुझको लगता, चरणों में शीश नवाऊँ।

हो जग के पालक तुम सर्जक, बने हुए क्यों निर्मोही।

विरह अग्नि जो जली हिया में, जला रही है वह मोही।

यह माना बंजर धारती मैं, तू बरसे लख न पाऊँ।

बिना कृपा ना कुछ भी होता, झर-झर नैना वर्षाऊँ।

प्रभुदाता तुम अन्तर्यामी, तोड़ो मुझसे ना यारी।

पथ दीखे नहीं कोई हमें, रो-रो अखियां यह हारी।

आंसू को गिरते हम देखे, क्या है किस्मत के लेखे।

ऐसा भी प्रभु गुनाह है क्या, जाये जीवन बिन देखे।

ऐसा ही वर तू दे हमको, यह स्कल जीव हो जाये।

चरणों में सिर रख लेने दो, ना हमको दूर हटाये।

4

हरि मैं छोड़ तुझे कित जाऊँ, जीया तरसे तुझको पाऊँ।

सारा जीवन यो ही बीता, कृपा करो मैं तुझ पग पाऊँ।

मात-पिता प्रभु तुम सर्जक हो, मेरी भी तुम विनती सुन लो।

मुझसे प्रभु ना करो किनारा, आंसू आंखों के तुम लख लो।

तेरा ही गुणगान करें हम, यह भवसागर पार करें हम।

तेरी ही यादों में खो कर, जीवन नैया पार करे हम।

पकड़ रहे पानी की लहरें, हाथ न आती होती खंडित।

इस तन को हम खूब सजाते, फिर भी होता जाता जर्जित।

है।

जैसे चाहो मुझे ले चलो, संग तेरा अच्छा लगता है।

विमुख नहीं तू मुझसे होना, तेरी यादों को जी लेंगे।

यह नयना तुझ ओर निहारें, अज्ञानी से ना रुठोगे।

चल-चल कर मैं हार गया हूँ, झलक तुम्हारी तरस रहा हूँ।

ऐसा भी क्या जुल्म किया है, जनम-जनम से भटक रहा हूँ।

आंसू गिरते राह निहारें, कैसे पाऊँ ओ मतवाले।

सकल सृष्टि के स्वामी हो तुम, हिया पड़े हैं मेरे छाले।

बार-बार हम नमन कर रहे, रोती अंखियां तुझे तक रहे।

नहीं यहाँ कुछ बस है मेरा, करो क्षमा बस यही कह रहे।

मेरे जीवन के प्रभु स्वामी, घट की जानो अन्तर्यामी।

जपते रहें नाम तेरा प्रभु, चाह यही रुठो ना स्वामी।

5

हरि बिना कृपा ना कुछ होई, भूल उसे तू जग में रोई।

याद कर बस वह ही सुनेगा, तू किन सुपनों में है खोई।

जपो उसे तुम जप लो उसको, जब तक जाता नहीं निकल दम।

नौका डूबे पार लगाये, कहें उसे ही हम अपने गम।

दर्शन की भूखी यह अंखियां, तुमसे मिलने को यह तरसी।

मेरी है सामर्थ नहीं कुछ, रिमझिम-2 यह तो बरसी।

नीर भरी अंखियां मग देखे, हरि तुम मुझसे काहे रुठे ?

पांव पड़ू हरि हमें न छोड़ो, जीवन के सब सुपने झूठे।

अवश यहाँ ना बस है मेरा, आंसू ही बस एक सहारा।

ईश हमें तुम अब तो लख लो, जीवन से अब मैं हूँ हारा।

नयन झरें हम नमन करे प्रभु, हमने तुमको टेर लगाई।

रुठो ना मेरे मन मोहन, तुमसे ही बस आस लगाई।

कहूँ किसे मैं हिय की न बूझे, मुझको तुम बिन और न सूझे।

लाज रखो तुम चरण दास हूँ, दो मग मोहि रस्ता सूझे।

6

भटक रहा चहुँ ओर जगत के, ठौर कहीं यह मन ना पाये।

तुम संभालो हे हरि मुझको, चैन कहीं मन यह ना पाये।

हूँ अनाथ तुम नाथ जगत के, कौन खेल को खेल रहे हो ?

तड़प रहा दिल तड़प सुनो ना, कौन मजा इसमें लेते हो ?

अज्ञानी-अज्ञान में जीऊँ, ज्ञान दृष्टि से क्यों हूँ वंचित ?

प्रतिपल चाहूँ तुझे पूजना, हाय हुई पूजा क्यों खंडित ?

तुम मेरे जीवन के जी हो, क्यों ना मेरा हाथ पकड़ते ?

रुष्ट हुए से क्यों तुम लगते, ना मैं होता नाहिं बिछुड़ते।

बेबस यह बेचारा दिल है, जग में उलझ-उलझ जाता है।

जाती बीत जिन्दगी सारी, कुछ भी हाथ नहीं आता है।

प्रभु तेरी महिमा अपार है, ;षि-मुनि गुण तेरा ही गाते।

नाद गूंजता इस धारती पर, उसमें वह है तुझे खोजते।

कैसे धीर धारुँ प्रभु बोलो, तुझको खोजा खोज न पाया।

मिट सका पतंगा ना बनकर, तुझको खो कर मैं खुद रोया।

नयनों में चाहूँ बस जाओ, तुझको ही बस गीत सुनाऊँ।

झर-झर नीर बहे अखियों से, उसमें ही बस मैं खो जाऊँ।

7

भज मन हरि छवि मन को भाई, बिन हम कहाँ तुम्हारे जाई।

अपना सेवक मुझे बना लो, ईश्वर बीत जनम यह जाई।

जग में भटका तुझे न पाया, जलता रहा नहीं सुख पाया।

HARI BHAJAN

ऐसी ज्योति जगा दे हिय में, अंधाकार का मिटे यह साया।

ईश तुम्हीं हो मेरे सर्जक, लगा रहे इस जग के ेरे।

तेरी करुणा के भूखे हैं, जग के बन्धान मुझको घेरे।

तुम्हीं उबारो पार लगा दो, खेबट बनो न आंखे ेरो।

आंखे मेरी तरस गई है, हरपल प्राण तुम्हें ही टेरो।

द्वार तुम्हारे आन पड़ा हूँ, मिलने को प्रभु तरस रहा मैं।

तेरी वन्शी की धुन सुन मैं, खो सुधि निज को विसराऊँ मैं।

अखियां देखे बाट निहारे, सुनने आहट को यह तरसे।

तप्त हुई यह बंजर धारती, मेघ निहारे कब यह बरसे।

;षी मुनी सब धयान लगाते, अपना दुखड़ा सभी सुनाते।

कैसे तुझे सुनाऊँ दिल की, ना जाने बस नीर बहाते।

बीती जाती जीवन घड़ियां, मत रुठो तुम मेरे सजना।

हार गया मैं चल-चल जग में, लगता ना कोई भी अपना।

रोये हिया नहीं यह माने, कैसे मिलूं तुझे दीवाने।

BY CHANDRA PRABHAKAR

हमें भूल कर कहाँ छिप गये, तुम बिन पीड़ न कोई जाने।

नाचूं गाऊँ तुमको पाऊँ, जन्मों की मैं पीड़ भुलाऊँ।

तेरे गीतों को गा-गा कर, बरसे नयना मैं हर्षाऊँ।

8

प्रभु तुम बिन मो कछु न सुहावे, चरण पडू मो तू न भुलावे।

जन्म-जन्म से दास तुम्हारा, विनती सुनो न दूर हटावे।

तुझ तक आऊँ कछु नहिं सूझे, प्यास बुझाऊँ नीर न दीखे।

ऐसे भी क्या हमसे रुठे, तरस गये न तुम मोहि दीखे।

तेरी डगर प्यारी लगत है, थाम लो मुझे जगत रचैया।

चले पर हम चल के गिरत है, भूलो न तुम बन्शी बजैया।

टूटे कभी न तुझसे नाता, तुझ करुणा का सदा भिखारी।

तुम हो मेरे भाग्य विधाता, हरपल तुझको जपे मुरारी।

यह चलती दुनिया निज धुन में, सब अपनी सरगम को गावे।

हे ईश्वर कुछ मुझे न भावे, आंसू सूखे न मुझे डुबावे।

कहूँ मैं कुछ अधिाकार नहीं हैं, रोता मैं कुछ भान नहीं है।

निष्ठुर ऐसे बनो न छलिया, कैसे रीझो शुष्क हृदय है।

तुम बिन जीवन भी क्या जीवन, जाते पल न आये मोहन।

*तेरी यादों में खो जायें, ऐसी पीड़ जगा मधु सूदन।*9

रोना चाहा रो ना पाया, जीवन का आनन्द न पाया।

थक कर अब मैं हार चुका हूँ, जीवन में कुछ जान न पाया।

रुठ गई यह सारी दुनिया, पीछे भागू हाथ न आये।

नीरस हो बैचेन हुआ मैं, दिल को धीरज कौन बंधाये ?

मिलन विछोह क्षण भंगुर है, इस रंग बदलती दुनिया में।

आश्वासन जाते बिखर सभी, प्रवाह पूर्ण इस जीवन में।

दोषी ठहराते है सबको, तीर कलेजे में बिंधाता है।

निज रंग नहीं समझे कोई, क्या खेल हुआ दुनिया में हैं ?

यह जन्म-जन्म का प्यासा मन, भटकेगा युंही जग के अंदर।

विष के प्यालों को पी कर ही, बीतेगा यह सारा जीवन।

किस किसको दिखायें दिल अपना, सब ही जख्मी से लगते है।

झूठी मुस्कानों को ले कर, धीरज अपने को देते है।

उस प्रियतम को पा ना पाऊँ, रोना चाहूँ रो ना पाऊँ।

जहर दिया जो तुमने हमको, उन घूंटों को पी ना पाऊँ।

वरष मेघ ओ आकर वरषो, सूखी झील हुई यह आँखें।

प्यासी झील लबालब कर दो, झर-झर झरना चाहें आँखे।

10

टूटे तार अधूरे स्वर है, गा ले मन तू क्या गायेगा ?

गाने को फिर भी उत्सुक है, तू इसमें किसे डुबोयेगा ?

जीवन की पगडण्डी पर, कहाँ जा रहा क्या है मंजिल ?

हुआ बावला सा फिरता तू, कौन क्षितिज में होगी हलचल ?

ढर-ढर बहते जायें आंसू, मन में टीस लिये तू फिरता।

जलन न आंसू की यह जाये, बस पीड़ा में आंसू ढरता।

कह लेता मैं रो लेता हूँ, हँस निरख तुझे मैं लेता हूँ।

पीड़ित हो सुबक-सुबक, हरपल उदास हो जाता हूँ।मैने तो थे बस गीत चुने, गीतों को गा मन बहलाता।

क्या कहूँ तुझे भगवन मेरे, कहने को कुछ भी न पाता।

रुठो तुम जाओ रुठ मगर, मुझसे शिकवा तुम मत करना।

इन प्रबल बेग धाराओं में, बस विवश हुआ मैने जाना।

आँखों के मोती झरने दो, उनको भी कुछ कह लेने दो।

इस वियावान जंगल में तो, निज कथा हमें भी कहने दो।

हम ढगते जग को रिते हैं, हम स्वयं ठगे ही जाते हैं।

जीवन की लेने को सुगन्धा, नित विष को पीते जाते हैं।

क्या अच्छा और बुरा जग में, नापा इस छोटी बुि) से।

हम हाय विवश होकर रि भी, अज्ञात चरण में ढलते हैं।

मैंनें झांका तुझ आँखियों में, करुणा का सागर लहराता।

क्यों हाय विवश हो मुनि बनकर, इस मौन-मौन में खो जाता ?

11

हरि बिन मोहि कुछ ना सुहावे, बाट निहाँरू अंखियाँ रोवे।

अरज करूँ प्रभु तू ना सोवे, चाह शरण में तू रख लेवे।

मात पिता गुरू बन्धु सखा तुम, मेरे खेवट जीवन धान तुम।

पार लगा दो मेरी नौका, रोये नयना आये ना तुम।

जग के बन्धान में बंधा घूमे, तेरा पता नहीं कुछ सूझे।

टप टप मेरे आंसू गिरते, है अंधियारा राह न सूझे।

चलूं जग में जाम तेरा पी, नयना बरसे हिय में बसता।

पल भर भी मैं तुझे न छोडू, कठिन डगर डर मुझको लगता।

मेरे प्राण पुकारें तुमको, दूर न कर चरणों से मुझको।

मेरे जीवन सर्जक हो तुम, पथ दे दे हम पायें तुमको।

विरह अग्नि में भस्म हुआ ना, तुमको भी मैंने पाया ना।

कैसा भाग्य लिये मैं घूंमू, हाय पतंगा बन पाया ना।

बंशी धुन सुन खो गई राधाा, भई दिवानी तेरी मीरा।

*कौन मुझे रोके है मग में, कब होगा हे श्याम सवेरा।*12

हरि तुम बिन जियरा नहिं लागे, कैसे मिलूँ कोई बता दे ?

भया बाबरा जग में डोलूँ, मिले हमें जो पता बता दे।

असुओं से मैं चरण पखारुँ, हारा हुआ मुसाफ़िर प्रभु जी।

रहूँ देखता कुछ ना बोलूँ, हिय में तुझे बसा लू प्रभु जी।

जग में रोता आया रोया, तुझे न पाया सब कुछ खोया।

कैसे मनुआ धीर धारे प्रभु, नहीं चरण रज मैं पा पाया।

जन्मों से मैं घूम रहा हूँ, मेरी सुधा को क्यों विसराया।

तुझ दर्शन को तड़ रहा हूँ, अन्धाकार से मैं घबराया।

ज्योति जगा दो पथ दर्शा दो, हम हैं अबल कृपा अपनी दो।

बहती यह आंसू की गंगा, चाहूँ प्यार हमें अपना दो।

हम मूरख मतिमन्द जहाँ में, बालक तेरे माफ कर हमें।

शरण हमें तुम अपनी रख लो, मत अनाथ कर इस जीवन में।

सदा तुम्हारे गुन को गाये, तुझसे ही हम प्रीति बढ़ाये।

इस दो पल के जीवन को जी, हरि-हरि कहते हम खो जायें।

अपनी कृपा बनाये रखना, बहते आंसू को लख लेना।

तुम्ही उबारो भवसागर से, मेरे खेवट हरि बन जाना।

मेरे मोहन मुझसे बोलो, रुठो मत तुम नयना खोलो।

द्वार तुम्हारे खड़ा हुआ हूँ, झोली भर दो रस को घोलो।

बन्शी की धुन हमें सुनाओ, मुरझाये हम हमें खिलाओ।

प्यासे नयना तुझे निहारें, बनकर मेघ बरस तुम जाओ।

जीवन के धान तुम्ही हमारे, जी पायें न बिना सहारे।

अपरम्पार तुम्हारी लीला ;षि, मुनि जग के सब ही हारे।

तेरी कृपा मिले तर जायें, नहीं जीवन में संकट आये।

हिय में ईश्वर तुझे बसायें, पुलकित हो तेरे गुन गाये।नयन चढ़ायें चरणों में जल, तू ही सर्जक तू ही पालक।

अन्धाकार से मुझे बचाओ, जीया मेरा करता धाक-धाक।

तुझे पुकारें देर करो ना, जाते पल थोड़े से बाकी।

ज्योति नयन की बुझती जाती, विरह अग्नि में भस्म हो चुकी।

पांव पड़ूं मैं तुझे मनाऊँ, रुठ न आंसू हार पहनाऊँ।

कुछ भी मेरे पास नहीं है, शर्माऊँ क्या तुझे चढ़ाऊँ।

दुख दरिया में मैं बहता हूँ, लख तुझको भी दुख देता हूँ।

कर्मपाश में बंधाा हुआ मैं, देख विवशता को रोता हूँ।

जीवन का हरि तू बसन्त है, भटके जीया तो पतझड़ है।

ना समझे जिय भया बाबरा, कैसा तेरा खेल चक्र है ?

संकट मोचन हमें उबारो, सद्कर्मों पर हमें चलाओ।

घृणा दूर कर प्यार जगा कर, रोते दिल को प्रभु हर्षाओ।

14

राख अपनी शरण में मोहन, तुम बिन मोहि कुछ ना सुहावे।

बना जोगी याद में तेरी, निशदिन अंखियां नीर बहावे।

जीवन के सुख को ना जाना, रिता रहा बना दीवाना।

तेरे नाम के प्याले को पी, पाऊँ जीवन में सुख पाना।

आंसू गिरे न कोई देखे, किसे कहूँ पीड़ा जो मेटे।

जीवन तुम बिन है अंधियारा, कृपा होय दुख सभी समेटे।

हार गये हम चल ना पाये, देख रहे कब दीप जलाये।

हम हैं अबल नहीं कुछ जाने, बस आंखों में आंसू आये।

चलूँ मगर हिय में डर लागे, मत रुठो तुम मोहन मुझसे।

तुमको याद करुँ मैं तड़ूं, तुझ दर्शन को अंखियां तरसे।

तुझे चढ़ाऊँ पास नहीं कुछ, रखता हूँ बस मैं दुख ही दुख।

कैसे पार करुँगा भव को, पथ दर्शा दो हिय पाये सुख।

इस जीवन के प्राण तुम्ही हो, सुख सागर हिय बसे तुम्ही हो।

*डूब न जाये मेरी नौका, मेरे खेवट ईश तुम्ही हो।*15

तुम्हारे दास हम स्वामी, कृपा हम पर सदा करना।

कसम है नीर की तुमको, न मुझसे रूठ तुम जाना।

भटकते फिर रहे हैं हम, पायें तुझको हम कैसे?

करो तुम ज्ञान की वर्षा, मिटे तम दीप लख जैसे।

करे हम अर्चना तेरी, बसा दिल में सदा तुमको।

खिवैया ईश तू ही है, चरण में दे जगह मुझको।

गीतों को तेरे गाकर, कटे मेरा रूर सारा।

हमारा तू सहारा है, न मुझको छोड़ मैं हारा।

डगर लम्बी न दीखे कुछ, छिपे हैं तुझमें सभी सुख।

जगत का तू रचैया है, नहीं तेरो कभी तुम मुख।

तुझे पाये तरसते हम, न जाने तुम मिलोगे कब?

बहे जो याद में आंसू, उसे ना छीन लेना रब।

जगत के बीच तेरा जप, हमें ढाढ़स बंधाता है।

गिरे जो आंख के मोती, कहें तेरा सहारा है।

झुका यह शीश चरणों में, न उठना यह कभी चाहे।

बचा लो हे हरि मुझको, जग की अंधी जो राहें।

16

अपने पीछे मुझे ले चलो, मुड़ ना देखूँ जग यह छूटे।

लहराता प्रभु सदा रहे तू, वर्षा यहाँ प्रेम के छींटे।

अपने सुख को खोज रहे सब, छूटे कोई साथ नहीं सब।

दुख ना मान भजन हरि कर ले, खेला दो दिन का है यह सब।

वही उठावे वही गिरावे, नये नये नित खेल खिलावे।

पागल मनुआ भ्रम में भटके, नित ही नया संसार सजावे।

नाप सकें ना हम गहराई, रोवे अंखियां सुन ले सांई।

मुझको पार करा दे नदिया, बल न मुझमें कृष्ण कन्हाई।रे जग के कर्ता तुम ही, भटके जिया ज्ञान भी तुम ही।

दीप जला पथ आलोकित कर, तम हर लो प्रकाश हो तुम ही।

नाम तुम्हारा लेता जाऊँ, पत्ता सा मैं बहता जाऊँ।

आंसू से भीगी यह अंखियां, बसो नयन में प्रीति बढ़ाऊँ।

मात पिता तुम बन्धु सखा हो, रूठ नहीं जाना मुझसे तुम।

बिना कृपा तेरे भगवन हम, डरते सदा रहेंगे हरदम।

तेरे प्यार बिना सुख है ना, दन्श मिटे प्रभु जपे बिना ना।

कठपुतली हम तो हैं तेरी, सुरति कभी तेरी छूटे ना।

वश अपना कुछ नहीं जान ले, समझ इशारे और नाच ले।

ना विछुड़ा है ना विछुड़ेगा, धयान उसी का हरदम कर ले।

ना कर्ता बन सभी उसी का, द्वन्द छोड़ कर भजन हरी का।

जान सके ना तू गहराई, बहे जा जलधा बीच लहर सा।

यदि कृपा ईश की हो जाये, सब क्लेश मिटे इस जीवन के।

पिंजड़े का पंछी राम जपे, बिन कृपा न उसकी छूट सके।

बल कितना तू कूद लगाये, नही कही फिर भी पथ पाये।

हरि बिन कृपा न कोई उपाय, समझ नही क्यो दिल में आये।

कर्ता बन कर हुआ बाबला, जाते पल ना याद किया रब।

ज्ञान नही था क्या ज्ञानी अब, कुछ तो समझ यहाँ मूरख अब।

पूछा किसने जब हम आये, जायेगे बिन पूछ यहाँ से।

कोल्हू के हम बैल हुए हैं, नीर न सूखे इन अंखियों से ।

पांव पड़ी बेड़ी सुलझा ले, खुद ही बांधी भूल गया क्यों?

मन बैचेन हो रहा तू क्यों, बहता जा तू नही बहे क्यों?

जप उसको तू हृदय बसा ले, अंधियारे में साथ वही दे।

साथ छोड जाते सब अपने, उन घडियों में वह सम्बल दे।

राम नाम की धुन में डूबो, दुनिया के सब दुख को भूलो।

*सब उसकी मर्जी से होता, सोच समझ दुख हल्का कर लो।*18

तू जी हरी पर ही धारे, मनुआ शिकायत ना करे।

जानो दो पल है जीवन, वह धान्य जो सुमरण करे।

वासना की दौड़ अपनी, कौन सुने किसको कहनी।

रोते सब अपनी गाथा, कर भजन नहिं सांस रहनी।

हम यहां असमर्थ कितने, देखें हम लुटते सुपने।

कूल छुटते जा रहे हैं, न लहर के छुटते सुपने।

मोह टूटे यदि लहर के, प्रीति होवे फिर जलधा से।

जलधा के आगे विवश हम, बह चले उसकी रजा से।

भजन हरि विरह जगाता, जोड़ो उससे ही नाता।

हरि भजन बिन है नहीं सुख, धान्य वह जो ना अघाता।

पाप से उठ पुण्य से उठ, अश्रु चरणों में चढ़ा दे।

शिशु बने मां को पुकारो, राह तुझको बस वहीं दे।

उस इशारे के पथिक हम, वही है सर्जक संहारक।

गर्व करना क्या यहां है, लहरों का वह ही धारक।

सांस जब तक आ रही है, देखो जीवन का मेला।

ना पता कहां जायेंगे, जप हरि कर मन न मैला।

19

तुम बिन मेरा जीवन सूना, मेरे भाग्य विधाता।

जाने ना कुछ भटक रहे है, जीवन बीता जाता।

नीर गिरें और पंथ निहारें, तुही मुक्ति का दाता।

शरण पड़ा मैं लाज रखो तुम, मेरे जीवन दाता।

कृपा तेरी हो जाये स्वामी, ूल कमल खिल जाता।

खा-खा चोट हुआ दिल जख्मी, चला नही अब जाता।

प्यासा कंठ है काली रातें, अंधियारा ना दीखे।

दे प्रकाश की किरन हमें भी, तेरी सूरत ही दीखे।जग के मेले में भटका हूँ, लाज रखो शरणाई।

स्वर मेरे तुम बिन हैं रोते, कृपा कर हे गुसाई।

चलूं मगर पथ को नहिं जानूँ, केवल रोना जानूँ।

सकल जगत के तुम हो स्वामी, तुमको ही मैं मानूँ।

अबल हम हैं शक्ति के दाता, पिता तुही है माता।

विसरा तुमको भटक रहे हैं, रोवें भाग्य विधाता।

अगम अगोचर पार न तेरा, करो दूर अन्धोरा।

अश्रु बहे यह तुझ तक पहुँचें, प्यार चाहे घनेरा।

कहाँ से आये कहाँ जाना, जाने ना सपना है।

नही वासना पूरी होती, जाने सब खोना है।

संकट मोचन नाम तुम्हारा, हरो दर्द का मारा।

देखें शून्य गगन में आखें, कहाँ छिपा है तारा।

20

चल अकेला ही चले चल, राह किसकी देखनी है।

कंटकों को लांघते जो, वीर कहलाते वही हैं।

चले चल लघु दीप भी है, लक्ष्य पर ले जायेगा।

ना चला तो सोचने में, बीत जीवन जायेगा।

गिर-गिर कर खुद ही सम्भलो, राह किसकी देखते हो।

अश्रु से भीगी धारा है, दर्द न केवल तुम्ही हो।

करो प्रभु की अर्चना तुम, वही है सब ज्ञान मूरत।

नयन से जब नीर निकलें, भूल न सब उसकी कुदरत।

सुमरो उसको चलता चल, फर कटेगा यह सारा।

वैर कर ना इस जगत से, वही जाती नदी धाारा।

प्यार को पाना यहां है, नहीं कांटों में उलझना।

वही है बस एक झरना, फिर मिलेंगे तुझे सजना।

चला चल ले याद उसकी, हम उसकी ही कठपुतली।

*डोर से नाचें उसी की, बिन कृपा छंटती न बदली।*21

आशाओं में है जीते हम, कितने उठते कितने गिरते ?

अनगिनत कथाओं को लेकर, निशदिन उनको गाते फिरते।

अनबूझ पहेली है जीवन, ना आदि अन्त को समझ सके।

ले वर्तमान में आशा को, यह सारा जीवन काट सके।

कैसी विडम्बना जीवन में, रो-रो कर चुप होना पड़ता।

कितना चीखों इसी शून्य में, सम्बल निज को देना पड़ता।

चल मन मुझे भुलावा देकर, वहाँ-जहाँ सब लीन हो रहा।

किसे सुनाऊँ अन्तस पीड़ा, अन्तहीन न छोर दिख रहा।

हम समझाये इस को कैसे, इसकी अपनी इच्छायें हैं।

रो-रो कर आँखें सूज गई, तुम मिले नहीं बेगाने हैं।

गीतों को गाते जायेंगे, अतृप्त प्यास को हम लेकर।

आंसू से लिखते जायेंगे, जो टीस ऊनती है अन्दर।

मेरा प्रणाम तुम ले लेना, बन सका तुम्हारे काबिल ना।

इस अनन्त दुनिया के अन्दर, खो रहा और खोने देना।

ना प्यार गीत के सुना सके, दिल तोड़ा मैं खुद भी रोया।

था कौन गलत और कौन सही, तेरी यादों में बस खोया।

22

आज गाऊँ गीत मैं क्या, अश्रु सूखे सब नयन के।

कर रहे अठखेलियाँ तुम, दर्द न छूओ हृदय के।

ढूंढती है जिन्दगी यह, राह पर मिलती नहीं हैं।

इस विराने में भटक कर, खोज ना पाती कहीं हैं।

हम सजा के चले सपने, क्षण में यह सब टूटते।

हम मनाते जिन्दगी को, हाय ना आंसू सूखते।

हम कहाँ जायें जहाँ में, बेड़ियों में बंधा गये हैं।

आँख के आंसू पुकारे, किस नियति से हम बंधो है ?प्यार का ना पाठ सीखा, हम भूख से झुलसे सदा।

हाय विधाता भाग्य क्या, हम तो रहे रोते सदा।

सूर्य, तारों, चन्द्रमा, ना मिला हमको उजाला।

हम करें शिकवा किसी से, इस जगत ने रौंद डाला।

ऐसी हुई बदनसीबी, रोता रहा देखा नहीं।

खाते रहे थपेड़े हम, तूफा पसीजा भी नहीं।

दो पल के सुख की खातिर, कदमों को मैं बढ़ा रहा।

मृगमरीचिका आंगन में, गिर अपना पथ ढूंढ रहा।

गीत कहो तुम्हें सुनायें, सुन खूब झरेगा पानी।

बिछुड़ गये हाय विधाता, कित खोजे पथ अनजानी।

भर चुका है दिल हमारा, तुम कहो तो गीत गाले।

डूबती नैया हमारी, आओ न अब खिल खिला ले।

23

बहते जाते अनन्त में हम, मिलता ना हमें किनारा हैं।

सुख-दुख पहिये में रंस कर, काटा जीवन यह सारा हैं।

पीड़ित सब अपनी व्यथा लिये, आंसू को किसने देखा हैं ?

कहते-कहते अपनी गाथा, मिट जाते सबको देखा हैं।

आंसू बहते मेरे झर-झर, उनको तुम देख नहीं लेना।

मतलब की इस दुनिया में तुम, रंस निज को पीड़ा मत देना।

किस-किस से हम करे शिकायत, मिटता हरपल ले कथा यहाँ।

मैं रोता हूँ रो लेने दो, आंसू को पोंछो नहीं यहाँ।

इस नाजुक बन्धान को तुम भी, गिर जाने दो मिट जाने दो।

स्वयं डूबता नहीं सहारा, अंधाकार में गिर जाने दो।

बीत रहा यह सब जायेगा, जीवन का यह अन्तिम पल भी।

दूर खड़ा वह हमें बुलाता, कभी मिलन होगा अपना भी।

भटका मैं यहाँ बहुत भटका, पर तुझ तक नहीं पहुंच पाया।

*बहे आँख के आंसू मेरे, ना अर्धा चढ़ा तुझको पाया।*24

अश्रु पी-पी कर धारा यह, पुष्प नित सृजन करे है।

रो रहा अनजान पथ है, न कोई मंजिल वरे है।

विविधाताओं से भरा जग, नित करे श्रृंगार अपना।

होते चल-चल कर जख्मी, न मिला जीवन का सपना।

प्यार के दो स्वर मिले ना, किस लिये हम जी रहे हैं।

आँख में आंसू लिये हम, दर्द लेकर चल रहे हैं।

इतनी बैचेनी क्यों है, दम यहाँ पर घुट रहा है।

तुम जरा सा गीत गा दो, इसलिये बस तड़ता है।

तुझ धुान सुनने को व्याकुल, हम सदा भटके जगत में।

इस पथ का राही बनकर, यह सदा खोजे डगर में।

भूली विसरी यादें ले, जीये जीवन की लीला।

जिन्दगी का सार भूले, मन हुआ क्यों हाय मैला।

चल यहाँ दो दिन का मेला, क्यों न इसमें हाय खेला ?

दर्द की लेकर घुटन को, जी रहा क्यों हैं अकेला ?

देख तू उस पार नभ के, कौन है तुझको बुलाता ?

भूल तू यह जग की पीड़ा, सुन कोई संगीत आता।

बात कर आकाश की हम, बांधाना सबको चाहते।

इक जरा सी चोट पर भी, विखरते न सम्भल पाते।

इस धारा आकाश में सब, खेलते हैं खेल अपना।

है यहाँ आशा संजोते, है जगत सारा सुपना।

अनगिनत जीवन समेटे, यह धारा तो मौन रहती।

नित खिलाती नया जीवन, जा चुका ना शोक करती।

आँख यह किसको निहारें, करें हैं गुणगान किसका।

पीड़ जिसकी जो हरे बस, वह करे गुणगान उसका।हर अंधेरी रात में नभ, झिलमिलाते हैं तारे।

जिन्दगी की डोर टूटे, देखना अदृश्य नजारे।

भीरु तुम बनना कभी ना, चले जाना इस जगत से।

प्यार लेना प्यार देना, और खो जाना जगत से।

भागते सब बेहताशा, शोर कितना है जगत में।

नहीं जानूं और रोऊँ, लक्ष्य क्या ले फिर रहा मैं ?

इस जगत को जितना पकड़ा, छूट कर वह दूर भागा।

हम पकड़ न पाये इसको, जिन्दगी का टूटा धागा।

जब समय की मार पड़ती, चाह कर कुछ कर न पाते।

बन कर तभी असहाय बन, शीश चरणों में नवाते।

26

चलते हैं चलते चलते, न पता कहाँ जायेंगे ?

नीर आंखों में भरे है, क्या तुम्हें हम पायेंगें?

अबल हम हैं तुम सबल हो, इस जगत के हो रचियता।

फिर रहे हम तो भटकते, तुम ज्ञान दो पाये पता।

खो गये हैं भीड़ में हम, ईश तुम अपना बना लो।

चाह जीवन की तुही है, आंसुओं को ईश लख लो।

बल न भगवन हम अबल हैं, भटकते अनजान जंगल।

कृपा हमको मिले तेरी, दूर हो सारे अंमगल।

अश्रु को स्वीकार कर लो, तुम क्षमा का दान दे दो।

तुम को जपे प्रभु हम सदा, ईश नैया पार कर दो।

सब जगह है राज्य तेरा, दूर मुझसे क्यो हुये हो।

डूबते हम ना किनारा, क्यों मुझे तरसा रहे हो?

बीत जाये जिन्दगी यह, दे दे मन्दिर का कोना।

*अज्ञानी हम तो रोते, दे किरन तू रूठ अब ना।*27

तुमको प्राण भजें यह हरदम, मेरे जीवन की तू सरगम।

तुम बिन ना कुछ अच्छा लागे, प्रभु दया दृष्टि रखना हरदम।

जीवन की अंधियारी रातें, मुझे डरावे जिय घबरावे।

तुमको मेरे प्राण पुकारें, संकट से बस तू ही बचावे।

करो कृपा कट जाये जीवन, अंखियां नीर गिराती हरदम।

बजे मुरलिया तेरी कृष्णा, सुधि-बुधि खो मैं नांचू छम-छम।

;षी मुनी ज्ञानी सब सुमरे, डगमग करता जीवन सुधारे।

नाम सहारा केवल ऐसा, जो सुमरे वह भव से उतरे।

सृष्टि रचियता सृष्टि अनूठी, कह न सके कुछ बु) है छोटी।

रस तेरा हिय में भर जाये, ूल खिलें तब तन यह माटी।

तुझे पुकारें हे दुखभंजक, प्राण करें यह हरपल क्रन्दन।

आंसू की धाारा को देखो, इस मेरे जीवन के स्पन्दन।

सदा तुम्हारी करें आरती, जिव्हा गुन गा-गा ना थकती।

खोया यहाँ प्रीति में तेरी, हुआ मगन नैया खुद बहती।

करें अर्चना आंसू की बस, नहीं यहाँ कुछ हमरे प्रभु बस।

दास तुम्हारे रुठ न हमसे, तुझे निहारें यह अंखियां बस।

मैं थका हारा मुसाफिर, इक नदी में बह रहा हूँ।

आयेगी चट्टान मग में, देखना मैं जा रहा हूँ।

एक रस्ता ना जहाँ में, हैं अनेकों पथ यहाँ पर।

हर कोई खोजे रस्ता, क्यों करें शिकवा किसी पर ?

कह रहा बस कह रहा हूँ, संकेत भी कुछ दे रहा हूँ।

अनन्त धवनियां है जगत में,एक धवनि मैं दे रहा हूँ।

कोई समझे या ना समझे, गीत गाता जा रहा हूँ।

दिल में जो पीड़ा छिपी है, व्यक्त उसको कर रहा हूँ।देख गीतों में छिपी है, टीस इक जो मन रुलायें।

पूछती यह टीस उससे, क्यों जग में हम हैं आये ?

दिल नहीं लगता लगाता, फिर रहा इस जगत अन्दर।

मैं शरण आया तुम्हारी, बहकता क्यों पलक अन्दर।

आस के खण्डर लिये मैं, थक चुका जीवन सफर में।

गिर पड़ू जब मैं धारा पर, देख लेना इक नजर में।

हम पथिक की बात क्या है, आये हैं खो जायेंगे।

गीतों को गाते-गाते, इसी जहाँ से जायेंगे।

तेरे है उपकार मुझ पर, जी रहा मैं सांस ले कर।

टूट जाये जब यह धागा, ना गिराना अश्रु मुझ पर।

रुठ जाओ ना कभी तुम, मुझे यह वरदान दे दो।

अश्रु का उपहार ले लो, मुझे अपना प्यार दे दो।

साधाना क्या चाहती है, यह समझ मेरे न आया।

अश्रु आँखों से जो निकला, मार्ग यह ना ढूंढ पाया।

जब प्यार की होली जली, तो रह गये हम देखते।

झांका उनकी आँखों में, वह ना हमें पहचानते।

चल रहे हम अकेले, साथ कोई भी न मेरे।

जख्म तुमने दे दिया जो, फिर भी मन तुमको टेरे।

तेरा किया श्रृंगार है, कुछ जीत है कुछ हार है।

समझा नहीं मन पा रहा, क्या जिन्दगी की प्यास है ?

आँख रो-रो कर थकी है, जग हुआ सूना हमारा।

मानता यह मन नहीं है, तुम्हें इसने फिर पुकारा।

हूँ विवश बस मैं विवश हूँ, जान बस इतना ही लेना।

बन सका बाती न तेरी, दोष मुझको तुम न देना।

कर रहा पूजा तुम्हारी, दीप में ना तेल बाती।

*सोंचते यह तुम्हीं होगे, क्यों न मुझको शर्म आती।*30

कितने रोए ना दिशा मिली, मन्जिल ने हरपल ठुकराया।

चलना जीवन का जान खेल, चलने में बस जीवन पाया।

तन जर्जर प्रतिपल चलता हूँ, क्या भूख लिये मैं जीता हूँ।

चलते-चलते गिर जाना है, इस सच को ले बस जीता हूँ।

पल-पल रंग बदलती दुनिया, किसे कहे यह जग है सपना।

इच्छाओं की गठरी ढोते, बीता जीवन कुछ न अपना।

तेरी छवि में समा रहा सब, फिर भी ढूंढ रहे तुझको सब।

विविधा रुप में खेल रहा तू, प्यास यहाँ पर जाने ना सब।

झूठ कपट की दुनिया में, अपना जाल लगाये बैठे।

मुझे मन दे दे तू, करुणा को हम खो न बैठे।

नीर गिरें जब इस धारती पर, मैं भी इससे रहूँ न पीछे।

जीवन के सब विरस हुए रस, एक यही रस मुझको दे दे।

हाय भुलावा दे ना पाऊँ, इस मन को समझा न पाऊँ।

टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी पर, सबके संग जी मर मैं पाऊँ।

भूल भुलैया की गलियों में, साथ रहा पर साथ न पाया।

सारा जीवन रोकर काटा, क्यों निष्ठुर तूने विसराया ?

अपनी इच्छा के घेरे में, हमको सब सच लगता है।

विलख रहा है कौन यहाँ, यह दिल किसका जलता है ?

जग में आंसू छलछला रहे, कितना रोए पूछ रहे ?

मन को धीरज दें हम कैसे, अन्धी गलियाँ भटक रहे।

चल-चल हारे न दिशा मिली, किसको रोए तू बतला ?

अनगिनत रचाये खेल यहाँ, ना दिल तेरा यह पिघला।

हमने जग में दुख लिये बहुत, अब तुझसे बात करेंगे।

बन सके न जैसी आशा की, नयना रिमझिम बरसेंगे।

जीवन की सांझ हुई अब तो, मिल लेंगे अब जी भर कर।

*तेरे आँचल में छिप जाऊँ, ढूंढा तुझको जीवन भर।*32

छूट रहें है सारे रिश्ते, रोक नहीं हम पावें।

बहती लहरे हाथ न आवे, कितना नीर बहावे ?

जप मन जप मन गूंजे हरि धुन, सफल जीव हो जावें।

शेष रहे जो क्षण है बाकी, जग में ना भरमावे।

दाता वही जगत का मालिक, जपो लगेगी लाली।

फूल उसी की बगिया के हम, वह ही अपना माली।

बालक हम प्रभु शरण राख लो, तेरे खेल निराले।

भटक रहे इस जंगल में हम, जीवन देने वाले।

चाह प्यार की लिये तड़पते, मोहन तुम ना रूठो।

बस जाओ तुम मेरे दिल में, मोह यहां सब झूठो।

अंधियारी रातों में प्रभु जी, तू ही दीप जला दे।

कहां जाऊं कुछ भी न दीखे, निष्ठुर नहीं सजा दे।

हम हैं अबल हमें ना भूलो, तू ही एक सहारा।

रो-रो तुमको प्राण पुकारें, बहती आंसू धारा।

ले चल मुझको मेरे नाविक, डर लहरों पर लागे।

नैया मेरी पार लगा दे, तुमसे यह हम मांगे।

33

घूमना चाहूँ मैं नभ में, पर नहीं मैं घूम पाता।

कौन सी मैं प्यास लेकर, यह जगत ना छोड़ पाता।

गम के प्याले हैं धारा पर, प्यार इनमें भर न पाता।

हूँ विवश कितना यहाँ पर, गम मिटा न उनका पाता।

देखता दिल की जलन को, आँख में आंसू को पाता।

दर्द में घुट जी रहा जो, हाय मैं कुछ कर न पाता।

आँख में आंसू लुढ़कते, पैर भी बोझिल हुए है।

हम गिरे बस उस जगह पर, गम में जो डूबे हुए है।

देख लो मेरी विवशता, कुछ नहीं कर पाये जग में।

*आ मिले नजदीक आकर, हो गये हम लीन तुझमें।*34

घूमा फिरा पढ़ा सुना हूँ, अज्ञान न मिटा मेरा।

यही डूबती सी जिन्दगी, अन्धाकार न मिटा मेरा।

चलने को चल रहा हूँ मैं, मंजिल है अनजानी यह।

धारती पर दे कर जन्म को, क्या ईश ने ठानी है यह।

बढ़ता ही जाता है विषाद, दुखों को देख-देख कर।

किसको दिखायें हम आज, रोते दिल को चीर कर।

मिटने का राज है यह क्या, इसको नहीं हम जानते।

तुम देख लेना हमको बस, जगत की खाक छानते।

मुझको अपनी धुन को यदि, सुना सको सुनाओ तुम।

बैचेन दिल तड़फता रहा, इसको नहीं रुलायों तुम।

35

नमन तुझे करते हैं ईश्वर, करें अर्चना मिलकर हम सब।

जग के पालक अन्तर्यामी, तेरे गुन गाते हैं सब रब।

धयान लगावे वह सुख पावे, हिय में तू जोत जलावे।

जग के पथ में करें उजाला, मन मन्दिर में शान्ति बहावे।

तुम स्वामी हम दास तुम्हारे, सारे जग के हो रखवाले।

मेरे सर्जक हम बालक हैं, हरपल तू ही हमें संभाले।

आँखों का जल तुझे पुकारे, मेरे जीवन रक्षक तुम हो।

बल दो सह पायें हम कांटे, इन आँखों में तुम्ही बसे हो।

काँटे बनते ूल यहाँ पर, दया तुम्हारी होती भगवन।

मग में बाधाा खो जाती है, खिल जाता है हिय का उपवन।

तुमको हम है शीश नवाते, मन वांछित ल तुमसे पाते।

इस जीवन के भाग्य विधााता, सुमरण कर तुमको सुख पाते।

बसे रहो मेरे अन्तस में, सुख के ईश्वर धाम तुम्हीं हो।

डगमग मेरी होती नौका, करते मुझको पार तुम्हीं हो।

कितने ;ण तेरे है मुझ पर, उनको चुका नहीं मैं सकता।

जब भी लागे बिछुड़ गये तुम, इन नयनों में पानी आता।

अपनी कृपा बनाये रखना, बिलग कभी ना मुझको करना।

*तेरे ही गुण गाते-गाते, लय हो जाये बस यह झरना।*36

जोगन हुई प्यार में तेरे, भटक रही मैं राह दिखा दे।

जनम-जनम की प्यासी सजना, पांव पडूं मैं प्यास बुझा दे।

अंखियां नीर गिराये झर-झर, पग कांपे यह मेरे थर-थर।

डर लागे तुम रुठ न जाओ, कैसे आऊँ मैं तेरे घर।

ले चल मुझको दूर सजन तू, तुझको निरखूं कुछ ना भावे।

पीड़ मिटे इस दिल की सारी, चरणा तेरे शीश नवावें।

ना विवेक अज्ञानी मैं हूँ, बिन तेरे आंखे यह नम है।

ले चल मुझको साथ सजन घर, बाकी बस थोड़े से पल है।

पाप पुण्य कर्मों की रेखा, ले पाऊँ ना इनका लेखा।

तुही उबारे मुझको सैंया, बस प्रकाश की तू ही रेखा।

37

कितनी गलियाँ जीवन जाता, चैन इसे ना मिला यहाँ।

कितना रोया कितना तड़पा, धयान तुम्हारा प्रभु कहाँ ?

रो-रो गाये गीत यहाँ पर, सुनने बाला नहीं यहाँ।

इतने निष्ठुर हो ना बैठो, आंसू की बरसात यहाँ।

खिले यहाँ पर खो जायेंगे, जपेंगे हम नाम तेरा।

हमें उबारो हे दुख भन्जक, करुणासिन्धु नाम तेरा।

टूटे भी तो ऐसे टूटे, चला नहीं हमसे जाता।

इतना निष्ठुर हाय हुआ क्यों, तोड़ दिया मुझसे नाता।

जीत सका ना हार गया मैं, नहीं इशारे समझ सका।

डोले यह बेचैन हुआ मन, न प्यास कंठ की बुझा सका।

अवश जान लेना अज्ञानी, भटका राह दिखा देना।

तुम बिन किसके आगे रोऊँ, ममता को वर्षा देना।

होनी है नित खेल खिलाये, जियरा हरदम भरमाये।

देव मेरे तुम्हीं संभालो, आंखों में आंसू आये।

जीवन की तुम ही सुगन्धा हो, मन खोजे कहाँ बन्द हो।

कृपा बिना प्रभु गीत उठे ना, सर्जक तुम छिपे कहाँ हो ?

अँधियारी रातों का दीपक, नीर गिर रहे हैं झर-झर।

*ईश किरन मिल जाये तेरी, मिटता तम देर नहीं फिर।*38

रोए हम इतना ही था, देख नहिं यह नसीब था।

क्या हमें भी तुम कहोगे, अनजान पथ बैचेने था।

चल रहे हैं जानते ना, हम तो गिरेंगे किस जगह ?

है यहाँ किसकी प्रतीक्षा, अनजान पथ है भयावह।

आँख खोली जगत देखा, शोर तब रो-रो मचाया।

दुग्धा की दो बूंद देकर, प्राण को चंचल बनाया।

आस को दिल में सजाये, ना पता हम कित रुकेंगे ?

थककर चल-चल के हारे, ना पता हम कित गिरेंगे ?

क्या प्रयोजन इस जगत का, जान कर क्या जान पाया ?

अश्रु से सिंचित हुआ जग, पुष्प है न कोई पाया।

जग यहाँ हर पल बदलता, तुम बदलते दुःख क्यों हैं ?

साथ यह तन छोड़ देगा, किससे पूछें दुःख क्यों हैं ?

चल यहाँ मस्ती अपनी, गिरना उठना है कहानी।

पीड़ अपनी तू छिपा ले, आँख में लाना न पानी।

आंसू को तुम न देखना, बुत बन बैठे रहना तुम।

पूजते तुमको रहेंगे, गुम हो बैठे रहना तुम।

39

नीर आंखों से बरसते, प्राण यह तुमको तरसते।

छिप गये तुम किस जहां में, रो रहे हम तो भटकते।

तुझ कृपा के हम भिखारी, रूठ मत ओ मेरे माली।

अश्रु की गंगा यह बहती, आंख की जाती न लाली।

ले चल मुझको ओ स्वामी, बह रही जो जगत धाारा।

पर बसो मेरे हिया में, बल ना मुझमें मैं हारा।

अपनी वंशी धुन सुना दो, खोजते तुझ चरण पाये।

विरह अग्नि बढ़ती जाये, मिट इसी में नाथ जायें।

दीखता न है अंधोरा, जाने न कब हो सबेरा।

तुम बसो हरि इन नयन में, टूट जाये दुःख का घेरा।

पथ यहाँ तुमको मिलेगा, जपो उसे बढ़ता ही जा।

वश ना कुछ भी तुम्हारे, कर्मो को करता ही जा।

रात है अँधियारी पर, साहस कभी न त्यागना।

निज पथ पर चलते जाना, यह जिन्दगी का खेलना।

करो न शिकायत किसी से, बीन कांटे तू डगर में।

दौड़ सबकी ही यहाँ है, क्या बसा तेरे हिया में।

हो समर्पित ईश चल ले, जिन्दगी का खेल जी ले।

छूटते सारे किनारे, जान कितना शोक कर ले।

उठती लहर और गिरती, खेल थोड़ा सा यहाँ है।

हो रहा बैचेन इतना, जाना न लगता यहाँ है।

सुरति ईश्वर में लगाकर, यज्ञ को तुम पूर्ण करना।

खेल उसका चल रहा है, जानकर यह धौर्य रखना।

नीर आंखो का न सूखे, बाग में तेरे खिले हम।

फिर रहे हम तो भटकते, कृपा करो मिटे सभी गम।

वन्दगी तेरी करें प्रभु, नीर आंखें में भरे हम।

तुम जगत के ईश स्वामी, लाज मेरी राखना तुम।

41

मन किसकी करे प्रतीक्षा है, सब उसकी ही तो महिमा है।

मन सांस सांस में राम जपो, उसका ही एक सहारा है।

बिन उसके पार न हो नौका, कांटो की चुभन सताये जब।

तू जान समझ ले यह है सच, भूलो ना याद करो तुम रब।

हरि भज ले गीत उसी के गा, कुछ पल बाकी ना जिया चुरा।

जो कल तक था वह आज नहीं, आती जाती है देख जरा।

हरि बस जाये हिय चाह यही, चरणों को धोवें नीर झरें।

हम भटक रहे जग के अन्दर, प्रभु सदा तुझे ही हम सुमरे।

सब लाज हरी के हाथों में, मन हाथ जोड़ कर कर विनती।

*अज्ञान तिमिर मिट जाये सब, हरि कृपा मिले पाये ज्योति।*42

मन लगता है कहीं नहीं, चहुं ओर डोल कर मन हारा।

तेरी करुणा का मैं प्यासा, जग हाय हुआ मुझको खारा।

तुझ चरणों में गिर कर रोऊँ, ऐसा पता बता दे मुझको।

थका हुआ चहुँ ओर निहारुँ, विमुख न कर वर दे दे मुझको।

थी क्या भूख जगत में मेरी, नहीं पता मेरे प्रिय भगवान।

नीरस होकर घूम रहा मैं, प्रेम सुधाा वर्षा दे भगवन।

बुझे हुए इस दीपक में तू, ज्योति जगा दे मेरे दाता।

टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी पर, ढूंढ रहा हूँ तुझे विधाता।

मैं देख रहा न कोई सार, इस दिल को कैसे समझाऊँ ?

हरि भी हे ईश बता मुझको, तुझ रज को क्यों ना पा पाऊँ ?

विछुड़ेंगे सब इस नौका से, किसके बन्धान में है यह जी ?

श्याम घटाये दुख ही संग हैं, चल हरि भज ले तू जग में जी।

कैसे समझाऊँ इस मन को, हरि भज तप से तू नहीं डरे।

मजबूरी भी जीवन संग हैं, रोए अँखिया यह नीर भरे।

मैं रोया ना आंसू देखे, कहूँ किसे किस्मत के लेखे।

निज को झाकूँ तुझ नयनों में, ना पाऊँ सब सूना दीखे।

43

भागा बहुत तुम्हारे पीछे, पर तुम मेरे हाथ न आये।

बीत गई जीवन की घड़ियाँ, प्रेम तान तू नहीं सुनाये।

खुश रहना अपनी दुनिया में, याद तुम्हारी ले जी लेंगे।

निर्मोही से दिल को लेकर, गम का घूट हमी पी लेंगे।

तेंक रहा पासे क्यों इतने, मुझे तंसा क्या मिल जायेगा ?

तन भी अब होता है जर्जित, सब मिटी में मिल जायेगा।

है एकाकी डगर यह मेरी, नहीं किनारा कोई दीखे।

गीत प्यार के गा ना पाया, इसीलिये दिल मेरा चीखे।

बीता पल-पल बैचेनी में, फिर भी तूने आँख न खोली।

*तप है कहाँ अधूरा मेरा, सदा रहा करता अठखेली।*44

हरि हम तेरे ही गुन गायें, इस जीवन को सफल बनायें।

आनी-जानी इस दुनिया में, हम तुमसे ही प्रीति बढ़ाये।

नदी नाव संजोग यहाँ का, छूट जाये कोई पता ना।

तुझे भूल हम ठोकर खायें, करो कृपा ना हमें भुलाना।

जीवन की अंतिम सांसों तक, नयना छवि तेरी बसी रहे।

प्रभु सदा मिले तेरा साया, परनिन्दा से हम बचे रहे।

टप-टप गिरते आंसू खोजें, जिय प्यासा तेरी प्यास लिये।

चाहें सदिया कितनी बीते, हम प्रेम पुजारी बन जीयें।

यह जगत तेरा तू ही पालक, कहने का है अधिाकार नहीं।

रोती आँखियां मेरी देखो, तेरे बिन खुशियां कभी नहीं।

मैं द्वार पड़ा मुझको लख लो, पीड़ा ना अब झेली जाती।

मुझसे मुख ेरो ना माली, मेरी बगिया सूखी जाती।

कठिन डगर है हमें खबर ना, कहाँ छिपा प्रभु तू बैठा है।

तेरी यादों में खो जायें, दर्द बहुत ही यह मीठा है।

जीवन की तू ही सुगन्धा है, प्रभु रोम-रोम में बस जाओ।

सांसों में हो तेरा सुमरन, तुम प्रेम सुधाा नित बरसाओ।

45

यहाँ पर है कैसी घुटन, ना पार इसके जा रहा।

तुम बता दो मार्ग कोई, मेरा साहस खो रहा।

चाह तुमसे स्वर मिलाऊँ, मैं मिलन के गीत गाऊँ।

हाय यह कैसी विवशता, स्वर न तुमसे साधा पाऊँ।

है नियति कैसी हमारी, मैं ठोकरों को चूमता।

कोई नहीं साथी मिला, जो रोती आँखें पोंछता।

देख नयनों को हमारे, सूख कर पत्थर हुए है।

इस समय की धाूल में ही, अरमान बिखरे हुए हैं।

बन सके न प्रिय किसी के, जिन्दगी ढोते रहे बस।

*तुम न आये जिन्दगी में, हम प्रतीक्षा में रहे बस।*46

बांसुरी तुम अपनी बजाओ, दुख से मुझको पार लगाओ।

जख्मी हो कर तुझे पुकारे, हरि भूल मुझको नहीं जाओ।

मुझे बना लो सेवक अपना, दुख ना दे जाते पल मुझको।

बीत जाये सारी उमरिया, हरि-हरि गाते भगवन तुझको।

करुँ मैं पूजा इन अंसुवन से, इनका कोई मोल नहीं है।

कैसे आऊँ तेरे द्वारे, पैरों में सामर्थ नहीं है।

रोते मेरे नयना देखो, अबल प्रभु मैं चाहूँ सहारा।

पीना चाहूँ प्रेम पियाला, करो न मुझसे कभी किनारा।

प्रेम पियाला मीरा पीया, लीन हुई हरि की दीवानी।

छम-छम-छम घुंघरु भी नाचे, पीछे छोड़े सारे ज्ञानी।

ब्रज की गलिया गावें राधाा, धान्य-धान्य हरि की प्रिय राधाा।

छोड़ जगत के सारे सुपने, निज को हरि डोरी से बांधाा।

जीवन क्या कुछ पल का खेला, बिन हरि कबहूँ मिले न चैना।

विषय भोग के दन्श चुभे जब, सोचे बीते कब यह रैना।

हरि जप लें हरि में खो जायें, नहिं सांसों को वृथा गवायें।

करुँ समर्पित हरपल हरि को, जीया हरपल हरि गुन गाये।

47

हम भटकते हैं यहाँ पर, आँख में आंसू हमारे।

तुम इन्हें न देख लेना, रुक न जाये पग तुम्हारे।

जिन्दगी की वासनाओं, को लिये हम जी रहे हैं।

है नहीं शिकवा किसी से, हम छले निज से गये हैं।

पाप क्या है पुण्य क्या है, धार्म क्या अधार्म क्या हैं ?

जान ना पाया अभी तक, जिन्दगी का खेल क्या हैं ?

बहके कदमों को लेकर, मैं निरन्तर चल रहा हूँ।

टूट कर बिखरुँ जहाँ मैं, खोज उस थल को रहा हूँ।

हाय मंजिल मुझसे रुठी, अर्चना मेरी अधूरी।

*जिन्दगी की राह सूनी, बन सका बाती न तेरी।*48

दो पल को हम मिलते, फिर कहीं बिछुड़ जाते।

रोती रहती अँखियां, फिर नहीं कभी मिलते।

कैसा जीवन दर्शन, कुछ समझ नहीं आता।

अनजान डगर सारी, थकते आंसू आता।

तू आंख उठा लख ले, दीखे न कूल कोई।

बहते है निर्मोही, नहीं सहारा कोई।

तू हमें प्यार देदे, दुख सारे तू हर ले।

तेरे गीतों को गा, इस नदिया में बह ले।

करुणा का सागर तू, इस जग का पालक तू।

ब्रह्माण्ड नचाता तू, शरण में रख ले तू।

मन्दबुि) अज्ञानी, तू ही प्रभु जी ज्ञानी।

छोटा सा दिल यह, तू तोड़ नहीं दानी।

चलते तेरे पथ पर, आंसू गिरते झर-झर।

ना प्रीति तोड़ देना, विनती मेरी ईश्वर।

उठना सोना जीना, तुझ यादों में बीते।

दुख देख जगत हारा, झोली भर हम रीते।

सुर अपने गुनगुना कर, गुजरेंगे डगर पर।

रोएँगे और हँसेंगे, गूंजे गूंज नभ पर।

कौन दर्द को सुनेगा, जख्मी सब यहाँ पर।

हँस कर सुना दे लोरी, बरसे नूर जम कर।

चले हम चलते खोना, कातर नहीं बनना।

उपजा है सब यहीं से, इसमें लीन होना।

मानो न मानो चाहें, दिल तो खो गया हैं।

पाने को कुछ नहीं है, खोज इसकी क्या है?

अपनी-अपनी धुनों में, गीत को गाते है।

*मुझसे तुम्हीं क्यों रुठे, यह अश्रु बहते है।*50

चले ही चले जग में, गीतों को हम गा कर।

अंधियारे में भटके, दे किरन चले पथ पर।

अपना न कोई यहाँ, आंखियां रोई थक कर।

प्यासे जन्मों से हैं, लख ले तू वंशीधार।

यह प्रीति नहीं छूटे, चाहें सांसे टूटे।

तेरी यादें प्यारी, तुमको यह प्राण रटे।

खुशियां देखी तुझमें, सब रंग बसे तुझमें।

ऐसी क्या होनी थी, मैं डूब रहा गम में।

हमको तुझ झलक मिले, स्तुति तुम्हारी करते।

मेरी आशा तू ही, ना शाम युहीं बीते।

तुमको हम नमन करें, दो प्यार ईश हमको।

सब कुछ तुम ही मेरे, न अनाथ करो हमको।

जग में आंखियां खोली, रो रो कर चिल्लाया।

भ्रम में डूबा घूमा, कैसी तेरी माया।

तुम बिन हारे प्रभु हम, तुम दया करो दाता।

मेरे हिय बस जाओ, दे ज्ञान हमें दाता।

51

तेरा जीवन तुझे समर्पित, रोता हूँ मैं फिर भी पल-पल।

प्रभु हमको तुम पथ दर्शा दो, भर-भर आवे जीया व्याकुल।

मात-पिता तुम हम हैं बालक, ज्ञान हमें दो तुम हो सर्जक।

करें अर्चना प्रभु हम तेरी, सृष्टि रचैया जग के पालक।

पार लगा दो नैया मेरी, मेरे मोहन रुठ न जाना।

एक सहारा तू ही दीखे, जीवन में हमने यह जाना।

लाज हमारी रख लेना प्रभु, विनती कर रहे यही हम।

झर-झर नीर निकलते मेरे, ईश नहीं कुछ रखता दम।

कर दो पथ को आलोकित प्रभु, तेरे चरणा पा जाये।

*अज्ञान तिमिर को हर लो प्रभु, शरण तेरी हम है आये।*52

ईश कृपा करना तुम हम पर, हम सब तेरे ही बालक है।

ठोकर खाते भटक रहे हम, प्रभु स्तुति तेरी ही करते है।

सकल सृष्टि के तुम कर्ता हो, तेरी परिकर्मा सब करते।

ज्ञान दीप हिय में दर्शा दो, नयनों से है आंसू झरते।

जग की टेढ़ी पगडण्डी पर, एक सहारा प्रभु तुम ही हो।

डगमग करती मेरी नौका, तुम ही तो खेवनहारा हो।

प्यार तुम्हारा प्रभु चाहते, भव सागर से हम तर जाये।

सद्कर्मो को करते करते, चरणों में तेरे हम आयें।

तू ही हमरा प्रभु जीवन है, सारे जीवन का दर्शन है।

शान्ति नहीं मिलती बिन तेरे, हारे सारे नृप भूपति है।

दया करो हे कृपा सिन्धु तुम, दुख के बादल सब दूर करो।

प्रभु तेरे गीतों को गाये, तुम पथ आलोकित सदा करो।

तेरी प्रभु प्रीति नहीं टूटे, असुवन से इसको सींचूगा।

तुम रूठ नहीं मुझसे जाना, बिन दया जगत में भटकूंगा।

अनजान डगर अन्धाी राहे, दीखे ना कुछ जी घबराये।

प्रभु विनती तुमसे करता मैं, तू ज्ञान दीप को दर्शाये।

जाते पल तुम भूल न जाना, कंपती नौका पार लगाना।

मेरे जीवन सर्जक हो तुम, दिल की बात समझ तुम लेना।

53

वंशी की धुन पर होऊँ मगन, मिलने की तुमसे मुझे लगन।

पांव पड़ू आंख धोये चरन, वसो प्रभु जी तुम मेरे नयन।

हार गया दुख पाऊँ बहुत, निहारे विरह यह शून्य गगन।

रोवे जिय नहीं हम है सबल, छिपे कहाँ रुठो मत मोहन।

प्रभु चरणों में निकले दम, बहलता नहीं टूटा मन।

बरसे अंखियां मफ मुझे कर, कर पाऊँ नहीं कोई जतन।

बजे अनहद प्रभु यह ही लगन, बहे अंखियां न रुक जाये जल।

*नहीं कृपा बिना बरसे गगन, यादों में ही गुजरे सब पल।*54

क्यों यहाँ उलझे हुए है, जिन्दगी को जी रहे हैं।

देखें फिर भी हम है चुप, किस विवशता को लिये है ?

तन है जर्जर चल रहा है, भूख से अकुला रहा है।

सब तरु यह आँख देखे, काफिला यह जा रहा है।

आँख के मोती गिरे जो, कौन हा इनको संभाले ?

बेबसी के गीत गा कर, चाह हर कोई संभाले।

साथ तेरा लग रहा ना, साथ फिर भी चल रहे है।

है विवशता यह हमारी, नयन झर-झर-झर रहे है।

मीन पानी में विचरती, फिरै प्यासी जल बिना वह।

खेल कैसा चल रहा है, खोजते हैं साथ है वह।

ढूंढते ही ढूंढते हम, जल गर्भ में छिप जायेंगे।

लेकर अपनी हम कथाएँ, फिर ना और रुलायेंगे।

आँख को मैं देखता हूँ, नीर मोती से चमकते।

मैं तुम्हें कैसे सुनाऊँ, अरमान दिल में धाधाकते।

मैं विवश तुम भी विवश हो, कैसा बन्धान है हमारा।

भागती जा रही लहरें, तू जीता मैं हूँ हारा।

55

ईश चरणों में पड़े हम, कृपा तेरी चाहते हैं।

घूमते अनजान दुनिया, प्यार तेरा चाहते हैं।

मार्ग सद् हमें दिखाना, कंट से हमको बचाना।

नाम तेरा ही जपे प्रभु, तुम नहीं हमको भुलाना।

जगत के तुम ही रचैया, पार कर नौका खिवैया।

डूब जायें बिन झलक ना, भाग्य के मेरे रचैया।

अज्ञान के इस तिमिर में, ज्ञान का दीपक जलाना।

तेरे द्वारे बैठकर हम, भूल जायें सब जमाना।

हम अबल तुम सबल हो प्रभु, कंठ यह तुमको पुकारे।

*नयन की गंगा में बहकर, पा सके हम दर्श प्यारे।*56

आँखिया थकी निहारुँ तुझको, सदियां बीत गई ना आये।

नयन उठा कर देखो मुझको, धीरज मुझको कौन बंधाये ?

बीच भंवर में फंसी नाव है, कृपा करो हे संकट मोचन।

बना भिखारी घूम रहा हूँ, रोते बीता सारा जीवन।

कृपा दान तू दे-दे मुझको, तुमको खो मैं तड़ रहा हूँ।

तुझ बिन यह जीवन उदास है, जन्मों से मैं भटक रहा हूँ।

पल-पल प्राण पुकारे ईश्वर, बनो न रुखे ऐसे ईश्वर।

तुम बिन जीवन बहा जा रहा, छिपे कहाँ हो अगम अगोचर।

तेरे गीतों को हम गाये, बस तुझमें ही प्रीति लगायें।

भूल जगत के सारे गम को, तुझमें ही बस लय हो जाये।

तेरी राजी से आये हैं, काहे हमको नाच नचाये ?

कौन प्रयोजन लेकर चलते, आंसू हमरे सूख न पायें।

कितना बेबस बना यहाँ मैं, गिरे नीर तुझको खोया मैं।

ईश कृपा तुम हम पर करना, जग में घूमा हूँ हारा मैं।

रहे रजा में राजी तेरी, ईश हमें यह बल तुम देना।

हरपल बीते तुझ यादों में, नहीं हटे यह तुझसे नैना।

57

तू ही सर्जक तू ही दाता, अब न तू मोहि को तड़ावे।

हार गया हूँ भाग्य विधाता, करो कृपा मोहि न ठुकरावे।

नयना झर-झर नीर बहावे, राख शरण में जिय हर्षावे।

डगर न जाने बने दिवाने, दीप दिखा तुझ तक चल आवें।

छूटे जाते सभी सहारे, दुख की नदियां तो बहती है।

तुम बिन कोई नहीं हमारा, यादों में मूरत तेरी है।

पीड़ लिये हम जग में रिते, दुख को देख न हटता बादल।

मृगमरीचिका में पड़ रोते, कैसे समझाये मन पागल।

दो पल भी न खुशी से गुजरे, मनुआ तुझे याद कर रोये।

*वसो नयन में सूरत भावे, जिय तुम्ही से ही सुख पाये।*58

रंग अनेकों है जगत में, चाहूँ अपने रंग-रंग ले।

हम भटकते हैं यहाँ पर, तू दया कर शरण रख ले।

ज्ञान तुमसे ही मिलेगा, जप रहे तुमको निरन्तर।

चलते जाये तेरे पथ, कितना वह होवे दुस्तर।

अबल हम तुम लाज रखलो, प्राण यह तुमको पुकारें।

डूबी जाती है गगरी, चाह तू हमको उबारे।

तुही दाता हम भिखारी, रोते हम झोली खाली।

प्यार की दे भीख हमको, रुठ न तू मेरे माली।

नयन बस तुमको निहारें, भूलूँ दुख जग के सारे।

दीप सा जल कर निरन्तर, तुझ चरण में निज को बारे।

;षि मुनी ज्ञानी यहाँ पर, धयान तेरा ही धारे हैं।

पड़े हम अज्ञान में हैं, हाथ जोड़े बस खड़े है।

प्रभु तुमको कैसे पाये, लग रहे है दन्श हमको।

आंख के मोती ढुलकते, कर रहे हैं याद तुमको।

नाथ पथ हमको दिखाना, जी नहीं हमसे चुराना।

तुम पिता-माता हमारे, ना कभी यह भूल जाना।

59

मन हरि भजन करो सुख पाओ, जीवन के सब ताप मिटाओ।

वही सहारा देवे हरपल, उससे ही मन प्रीति बढ़ाओ।

जपो उसे बिन उसके सुख ना, देखें पल दो पल का सुपना।

सुरति लगाले उससे मनुआ, तुझे मिलेंगे तेरे सजना।

कितने समर्थ तुम यह जानो, कण-कण में तुम उसे निहारो।

मर्जी उसकी जान चला चल, घट से उसको नहीं बिसारो।

स्वप्न संजोते सुन्दर-सुन्दर, गिरते जाते हैं वह हरपल।

दिल यह अपना रमा उसी में, ꣼ट जाते ꣼रि दुख के बादल।

पिव-पिव रटे पपीहा बोले, नीर गिरावे सावन आवे।

*धारती भीगे अम्बर बरसे, धान्य हुआ वह हरि घर आवे।*60

ज्ञान ईश्वर तुम हमें दो, हम सब बालक तुम्हारे।

प्रेम की गंगा बहा दो, दुख हो सकें दूर सारे।

ज्ञान के हम तो पुजारी, ज्ञान का है रुप तेरा।

कृपा तेरी चाहते हैं, जिन्दगी में हो सबेरा।

अज्ञान की चादर ढकी, आस तुम पर ही टिकी है।

बन यहाँ कर्मठ जगत में, दे सके सुख बस विनय है।

शक्ति के भंडार हो तुम, दंश धारती पर अनेकों।

दूर उनको कर सकें हम, शक्ति दो ना दूर नेंको।

अश्रु को स्वीकार कर लो, प्रेम का तुम दान दे दो।

अबल हम तुम सबल हो, जान हमको मफ कर दो।

शुभ कर्म की डोर थामें, जगत अन्दर प्रभु चलें हम।

दूर घृणा भाव को कर, प्रेम में भीगे चले हम।

नमन हम करते तुझे हैं, सृष्टि के कर्तार हो तुम।

द्वार तेरे हम खड़े हैं, सुन प्रभु हमें प्यार दे दो।

61

मैं सेवक तुम मेरे स्वामी, जियरा रोये गिरता पानी।

डूब रही है नौका मेरी, पार लगा दो जीवन दानी।

तुम बिन जियरा भर-भर आवे, अँखियां हरदम नीर बहावें।

बिछुड़ गये तुम मुझसे मोहन, हमको ढांढस कौन बंधावे ?

पांव पड़ू मैं ठुकराना ना, बीती जाती जीवन डोरी।

तुम बिन भटक रहा मैं जग में, मफ मुझे कर कृष्ण मुरारी।

धूप दीप नैवेद्य नहीं कुछ, तुम बिन हिय माने ना कुछ सुख।

झरते आंसू तुझे बुलावें, मुझे प्यार दे तू ना दे दुख।

नीर बहें डूबे जिय सारा, टूटे मन का भ्रम प्रभु सारा।

हरि-हरि करते लय हो जाये, यह चाहूँ बस सृजन हारा।

कितने बीते जनम न जाने, अंखियां रोई जियरा तरसा।

*मेरे मोहन अब तो सुन जा, बनकर मेघ करो तुम बरसा।*62

भज ले मन राधो गोविन्दा, बिन उसके जिया न लगता।

अंखियां खोजें हरपल उसको, अश्रु नयन का है बहता।

निशदिन गाऊँ गीत हरि के, तुम ही हो मन के चन्दा।

नयन में छवि रहे तुम्हारी, दुख के काटो सब न्दा।

सृष्टि रचैया जग के पालक, मेरा रोवे यह जिवड़ा।

जीवन के रखवाले प्रभु जी, याद करे तुझको पिवड़ा।

धयान लगाये ;षि मुनि ज्ञानी, दे प्रकाश तू हरि अपना।

इस जीवन की प्यास तुही है, प्रभु जी सुधा मेरी रखना।

आंसू से हम करें अर्चना, मुझको भुला नहीं रहना।

जपे नाम को हम सुख पावे, बस मेरे हिय में रहना।

कितने तूने रंग बिखेरे, तुम बिन जी नहीं लगता।

तुमसे मिलूं नैन छलकाऊँ, हरि बस अच्छा यह लगता।

कहाँ छिपे बैठे हो हरि तुम, रोयें तुम बिन यह अंखियां।

मात-पिता गुरु स्वामी सखा, दूर करो दुख सांवरिया।

निर्बल के बल प्रभु तुम्ही हो, पीड़ हमारी प्रभु हरना।

नमन मेरा स्वीकार करो तुम, चाहूँ चरणों में गिरना।

63

चलने में होना तृप्त यहाँ, क्या पाना हमको खोना है।

बहना जिसने भी सीख लिया, वह मुक्त हुआ यह जाना है।

ओर न छोर किनारा जाने, भटके यह मनुआ न माने।

कित से आये कित जाना है, सोंचे हम बन कर दीवाने।

जला प्यार की धूनी पागल, कुछ तो चैन जिया को आये।

बहने दे जीवन नौका को, ना जाने यह कब खो जाये।

कर स्वीकार नियति जो चाहे, आना जाना उसकी मर्जी।

जपो उसी को राह दिखाये, जहाँ खिले सब उसकी मर्जी।

चलता जा गाता जा हरि गुण, तुझे इसमें शान्ति मिलेगी।

*यहाँ जल रही हरदम होली, न प्रहलाद सी तुझे डसेगी।*64

चल उड़ चल उस पार गगन के, जियरा तड़े बिना मिलन के।

अंखियां रोवे तू ना आवे, कहे बावरा सब इस जग के।

बिजली चमके छतिया धाड़के, चलू मगर फिर तम में भटके।

विसराना ना बस तू दिल से, खेल खिलाता क्या जीवन के।

इस जग में मोहि कुछ न भावे, मिलूं तुझी से नाचू जम के।

रीति न जानू रोना जानू, ले चल मन तू पार गगन के।

तुझ बिन जीवन कैसा जीवन, झर-झर झरते नीर नयन के।

कैसे पाऊँ ओ निर्मोही, गीत उठे बस यहाँ विरह के।

दर्शन पाऊँ मन बहलाऊँ, कट जायें संकट जीवन के।

तेरे बिन जीया नहिं लागे, कैसे रहूँ बिन साजन के।

रोती अंखिया हंसती सखियां, मारे हैं वह तीर चुभन के।

व्याकुल मनुआ ठौर न पावे, कैसे काटे पल जीवन के।

चल-चल हारा तुझे न पाया, दंश लगे मुझको जीवन के।

करो क्षमा करुणामय देखो, तुम्हीं सहारे आशाओं के।

प्रेम भिखारी घट है रीता, सुमन खिले कैसे जीवन के।

शरणागत लो मोहि ईश्वर, गाऊँ तेरे गीत मिलन के।

65

जीवन मेरा अजब कहानी, प्रभू तू ही तो पार लगाये।

डूब रही यह मेरी नौका, चाहूँ खेवट तू बन जाये।

आंखों के आंसू को लख लो, अपने चरणों की रज दे दो।

जन्मों-जन्मों से भटक रहा, शान्ति कृपा कर मुझको दे दो।

;षि मुनि तेरी महिमा गाते, भक्त याद कर नीर बहाते।

अगम अगोचर पार न तेरा, धयान धारे जो वह सुख पाते।

कृपा बनाये प्रभु जी रखना, अपने पथ से नहीं हटाना।

पल बीते तेरी यादों में, अन्धाकार को दूर भगाना।

नहीं जगत में तुमसे अच्छा, मन यह रोये खूब विरह में।

सदा गीत मैं तेरे गाऊँ, बस जाओ मेरे नयनों में।66

हे ईश कृपा करना हम पर, अज्ञानी हम है भटक रहे।

पीड़ा जो उबल रही मन में, तू बतला दे हम किसे कहें ?

नौका खाती हिचकोले हैं, अंखियां आंसू से पूरित हैं।

इतना क्यों निष्ठुर बन बैठा, छिप गया कहाँ उर घायल हैं।

वह पुष्प कहाँ से लाऊँ मैं, चरणों में जिसे चढ़ाऊँ मैं।

ना समझे यह रोती अंखियां, बतला पिव कैसे पाऊँ मैं।

दिन रात सुरतिया तुझे रटे, क्यों तुझ बिन जीवन नहीं मिटे ?

इस भूल भुलैया में भटका, मेरे जीवन किसलिये हटे ?

तेरी यादों में खो जायें, अपनी सुधि बुधि को विसरायें।

टूटे से इस जीवन में बस, खोंजे अंखियां तुमको पायें।

तुम नमन हमारा ले ही लो, कित-कित भटकेगी यह नौका।

ना जान सके जीवन मतलब, कैसा किस्मत का है धोका।

सुपने संजोये हमने थे, क्यों हमें अकेला छोड़ गये।

सब टूट गई हमरी आशा, क्यों हमसे तुम हो विलग हुये ?

आंसू का मोल नहीं जग में, पर याद तुझे कर सुख देते।

तू डुबा मुझे इसमें ही दे, बस इतना ही तुम सुन लेते।

67

मन मन्दिर की ज्योति जलाऊँ, पूजन कर प्रभु मैं सुख पाऊँ।

जग के दन्श सहे ना जाते, करो कृपा तुझ चरणा पाऊँ।

हार गये हम तुझे पुकारें, सुन ले दुनिया के रखवाले।

जिय मेरा यह भर-भर आता, लाज रखो तू ही संभाले।

मेरी पार लगा दो नौका, जिबड़ा याद तुझे कर रोता।

अगम अगोचर पार न तेरा, तुम बिन कृपा न जिय हर्षाता।

प्रभु बालक मैं अज्ञानी हूँ, तम में जीता गम पीता हूँ।

तू प्रकाश कर दे मेरे हिय, तुमको पाऊँ मैं रोता हूँ।

जनम-जनम की पीड़ मिटे प्रभु, फिर महके बगिया सुमन खिले।

*जीवन की अन्तिम सांसों तक, तेरे प्यार की ज्योति खिले।*68

हम हारे चलकर थके यहाँ, हे ईश कृपा हम पर करना।

नैया मेरी है डूब रही, तुम इसको पार लगा देना।

मैं जाऊँ कहाँ न पथ दीखे, आँखियों से नैना जल सींचे।

तुम कृपा करो हे कृपा सिन्धु, इस ठूठ वृक्ष को कौ सींचे।

हर लहर तेरे इंगित पर है, रुठा मुझसे क्यों ईश्वर है।

तेरे बिन मैं हूँ भटक रहा, क्यों प्रभु तू मुझ पर निष्ठुर है ?

कित जाये हम है जल अगाधा, नौका को पार करें कैसे ?

रोए पर तू है छिपा हुआ, इस दिल को दिखलायें कैसे ?

सब हार गये ;षि मुनि जग में, हम भी हारे हे प्रभु जी हैं।

दो दीप जल रहे मेरे क्यों, बिन तेरे रोते रहते है।

क्यों ईश यहाँ आये जग में, तेरी लीला ना जान सके।

यह मनुआ जग में भटक रहा, निर्मोही ना पहचान सकें।

हम बुला रहे बस रोते हैं, हरपल जीवन को खोते हैं।

बिन तेरे इसका मूल्य नहीं, किस चाहत में हम जीते हैं ?

नयनों से ईश हमें लख लो, तुझ ओर बढ़े हमको पथ दो।

जाता जीवन कुछ पल बाकी, इस सुख से आपूरित कर दो।

69

मैं हूँ शरण तुम्हारी ईश, ठुकरा ना मुझको वंशीधार।

दन्श सहे ना जाते मुझसे, अखियां नीर गिरायें झर-झर।

सब ताप मिटे तुझ कृपा मिले, जीवन में लहराये सावन।

मेरी अंधियारी रातों में, दीप जला दे तू दुख भंजन।

तुझे पुकारें रो-रो कर है, बालक डगर नहीं हम जाने।

खड़े ईश हम हाथ जोड़ कर, मिले चरण रज बस यह जाने।

कर्मों का लेखा है भारी, हम तो प्रभु निपट अनाड़ी है।

तू ज्ञान ज्योति को हृदय जला, चाहें यह सब नर नारी है।

जीवन महके तेरी बगिया, ना घृणा बढ़े इस जीवन में।

*तुम बसे रहो मेरे दिल में, सद्पथ पर चले सदा जग में।*70

भूत प्रेत चहुँ ओर डोलते, सर्पों का वह हार पहनते।

वन वैरागी जग में फिरते, धयान नहीं वह कभी छोड़ते।

उसको छोड़ यहाँ ऐसा क्या, विलग हुए दुख यहाँ भोगते।

याद उसे कर नीर निकलते, जग के वैभव सभी विसरते।

दुख के यह पल कट जायेंगे, साजन तुझसे मिल जायेंगे।

आशा दीपक नहीं बुझाना, बिन इसके न चल पायेंगे।

है अनन्त पथ नहीं किनारा, चलना ही बस धार्म हमारा।

गीत उसी के गाये जा चल, कट जायेगा जीवन सारा।

अपनी मजबूरी सब कहते, छोड़ स्वयं को हाय न बहते।

लड़-लड़ कर सब जीवन बीता, थके यहाँ अब कुछ न कहते।

जलूं शलभ सा अन्त न दीखे, कैसे व्याकुल जीवन बीते।

रो-रो पागल हुआ बाबरा, सारा जीवन यूं ही बीते।

सुख-दुख का खेल रचा प्रभु जी, तूने यह खेल बनाया क्या ?

पा सका तुझे न हे ईश्वर, ऐसा भी जीवन पाया क्या ?

हाथ जोड़ कर करुँ अर्चना, प्रभु बसे रहो नयनों में तुम।

निज को तुझमें ही विस्मृत कर, प्रभु मुक्त हो सकेंगे बस हम।

यह पागलों की दुनिया, हम भी एक पागल।

यहाँ देखता विलखना, जल रहा मेरा दिल।

हम ढूंढते हैं तुमको, लगता नहीं यह दिल।

इतना हुआ क्यों निष्ठुर, बन तू तो न पागल।

अँखियां हमारी रोती, खो तुमको भटकती।

तुम हो जगत के मालिक, सुनो मेरी विनती।

नहीं दीखता किनारा, डरें जल है खारा।

न जाने अब क्या होगा, प्राण का आधाारा।

चरणों में आ गिरे हैं, पागल को संभालो।

*ना जानते हैं कुछ भी, लाज मेरी रख लो।*72

अपनी इच्छाओं में ंसंकर, बिता दिया यह जीवन सारा।

हार थके नमन है ईश्वर, यहाँ विवश न जोर हमारा।

कैसे पाये तुमको प्रभु जी, पाप पुण्य के कितने बन्धान ?

यह जंजीर न हमसे टूटे, मुक्त करो यह सगरे बन्धान।

चलता हूँ बस नाम तुम्हारा, साथ लिये कागज सा बहता।

कुछ भी हमको ज्ञान नहीं है, आंसू आये बस रो लेता।

गुनाह मिटे न क्षमा मांगते, कैसी मेरी मजबूरी है।

पेट सदा खाली ही रहता, कैसी कर्मों की केरी है ?

हिंसा हो रही कदम-कदम पर, हम व्रत अहिंसा का लेते हैं।

हाय इसे न पूरा करते, निज को ही धोखा देते है।

पागल मन समझाये कैसे, हाय सत्य को पाये कैसे ?

मिटे लहर सागर बन जाये, विसराये हम निज को कैसे ?

तुम्हारे इंगित से हम आये, तुम्हारे इंगित पर जाना है।

ढोते लगता बोझ स्वयं हम, होता वह ही जो करता है।

तू तो करुणा का सागर है, निष्ठुर तू मत होना मुझसे।

हाथ जोड़ कर करुँ अर्चना, प्रभु तू विलग न होना मुझसे।

73

चरणों में तेरे पड़ रोता, चला नहीं जाता अब माली।

ूल चमन के तेरे है हम, ठुकराओ मत रातें काली।

बीच जलधा के मैं हूँ खोया, टूटा दिल मन्जिल ना कोई।

आंखों से है नीर निकलते, बता खता क्या मुझसे होई।

तू ना मुख से कुछ भी बोले, यहाँ प्यार की होली जलती।

देता इतना दर्द हमें क्यों, जल-जल राख यहाँ मैं होती।

यदि प्यार से हमें देखता, हर्षाता यह जिया धाड़कता।

अजनबी अनजान नहीं बन, मन चाहे पथ हमको देता।

डरती आंखे सहमी-सहमी, खोज रही जंगल में डेरा।

*अंधियारा यह कभी मिटेगा, आस लगी कब होय सबेरा।*74

भज मन राम नाम सुखदाई, तेरो दास मैं रख शरणाई।

तुझ बिन पथ कोई ना दीखे, इन नयनों ने झड़ी लगाई।

पाव पड़ू मोहि न विसराओ, रुठो ना जियरा ना जलाओ।

जन्म-जन्म से भटक रहा हूँ, हे प्रभु तुम अब तो आ जाओ।

किसको हम आंसू दिखलावे, हरि तेरे बिन चैन न पावें।

मैं चहुँ ओर जगत में डोलूं, ठौर न मुझको कोई पावे।

देखूँ मैं उस पार क्षितिज के, कोई किरन नजर आ जावे।

व्याकुल मनुआ सोच रहा है, बिन तेरे अब रहा न जावे।

नैना तरस गये ना आये, तुम बिन जियरा क्यों ना जाये।

इतने निष्ठुर बनो न प्रभु जी, ईश शाम यह ढलती जाये।

सांस-सांस में जपूं तुम्हें मैं, विलग न कर मुझको हरजाई।

जग की भूल भुलैया में रंस, तुझे न भूलूं छविमन भाई।

तुझ तक पहुंचू बल न मुझमें, हिर भी तुझसे प्रीति लगाई।

रोने का बस एक सहारा, कभी मिलेंगे पग को पाई।

तुझमें सोऊँ तुझमें जागूं, प्यास मुझे दे यह मन भाई।

सब सुधि को विसरा कर प्रभु जी, डूबू तुझमें आस लगाई।

चलूं मगर मैं पथ न जानूं, ठोकर खा-खा कर उठ जाऊँ।

अंधियारे में कुछ न दीखे, इस पीड़ा को किसे दिखाऊँ ?

खोजूं चहुं दिश पता न तेरा, निज को देख-देख शर्माऊँ।

किन सपनों को लेकर आया, निशदिन प्रभु जी मैं भरमाऊँ।

देव जगत के तुम ही स्वामी, कृपा करो हे अन्तर्यामी।

अश्रु को स्वीकार करो प्रभु, जान सके ना तुमको स्वामी।

चल-चल हारा तुझे न पाया, फिर इस दुनिया में क्यों आया।

तेरी रहमत बिन सूना सब, भंवर जाल में है उलझाया।

मन को कैसे समझाऊँ मैं, पीड़ा को किसे दिखाऊँ मैं।

*विनती मेरी सुन लो प्रभु तुम, तुझ चरण धूल को चाहूँ मैं।*76

मैं हूँ सदा चलता रहा, यह दिल सदा जलता रहा।

मिल सकी मंजिल न मुझको, गिर-गिर सदा उठता रहा।

कल्पना मैंनें संजोई, चाहा तुम्हीं को देखना।

पर न पाया देख तुमको, है चल रहा बस तड़ना।

गिर रहे आंसू हमारे, कोई नहीं है पूछता।

मिट गये सपने हमारे, हा दर्द दिल में लौटता।

हम उठा कर चल रहे हैं, दर्द को पर हम थके हैं।

जिन्दगी से लड़ रहे हैं, जिन्दगी न जी सके हैं।

हो मुबारक तुम्हें खुशियां, हमें तो रोना न आया।

इस तड़ती जिन्दगी में, न जला आँखों का दीया।

सब तरु है अन्धोरा, गम में पागल मन डूबा।

मैं कहाँ जाऊँ समझ ना, देखता संसार तोबा।

कर दीवाना तुम मुझको, छिप गये हो संसार से।

आँकु कैसे जिन्दगी यह, जुड़े हो तुम हर सांस से।

मिट गये मेरे सभी रस, गमों में जीते रहेंगे।

नाम तेरा ही रटेंगे, प्यास यह दिल में रखेंगे।

भूलना हमको न तुम भी, बस कृपा इतनी ही रखना।

गिरते झर-झर आंसूओं को, पलके उठा देख लेना।

77

भज लो मन राधो गोविन्दा, यह जीवन है दो दिन का।

राम-राम बस राम पुकारुँ, तू वर दे-दे मिटने का।

तुम बिन जीवन तड़ रहा है, यह जीवन काहे अटका।

तेरी यादों में खो कर कुछ, मैं सुख ले लूँ जीवन का।

रोते-रोते बीत गया सब, तुम कृपा करो मैं भटका।

तेरा लेकर नाम मिटूँ मैं, तब मिट जाये दुख मन का।

नौका मेरी बही जा रही, मो दीखे ना पथ मग का।

*राम-राम बस जपूं निरन्तर, बन जा खेवट इस मन का।*78

बढ़ रहा तुम्हारी ओर प्रभु, अपना दामन तुम दे देना।

पापों से सनी चदरिया है, तू थाम मुझे बल दे देना।

गिरते आंसू की गंगा में, क्या कहे समझ ना आता है।

तेरी आँखों में झांक-झांक, काटा यह जीवन सारा है।

मिलते खो जाते जगती पर, आंसू की भेंट चढ़ाते हम।

पीड़ा से पीड़ित जख्मी दिल, क्यों सिसक-सिसक रह जाते हम।

कौन सही और कौन गलत, कैसे निर्णय हो इस जग में।

अपनी-अपनी लिये वासना, सब ही फिरते है इस जग में।

देती धाारायें गति को जब, प्रतिपल ही हम बढ़ते जाते।

प्रतिकूल हुई धाराओं में, सिसकी भी हम ना ले पाते।

छोड़ी उलझन हम बहते हैं, हम बहते बस धाराओं में।

किस जगह मिटेंगे ज्ञात नहीं, अज्ञात छिपा किस कोने में।

तेरी ही हम कृपा मांगते, घूम रहे इस निष्ठुर जग में।

नयनों के आंसू सूखे सब, विलख रही आशायें घट में।

लिये कल्पना चल-चल हारा, जीवन का श्रृंगार विसारा।

गिर चरणों में रो ना पाया, घर सूना ना दीप जलाया।

79

खोजूँ तुमको दीप जला दो, इस जीवन को प्रभु हर्षा दो।

अंधियारे जीवन में हे प्रभु, चाहूँ ईश उजाला कर दो।

हम बालक अनजान डगर है, राह निहारें धयान किधार है।

कैसे करें तुम्हारी विनती, अज्ञानी हैं ज्ञान नहीं है।

टप-टप गिरते आंसू देखें, सुधि कब लोगे तुमको टेरे।

हार गया अवरु) कंठ है, सुन लो मेरे प्राण प्यारे।

कितने बीते जनम ज्ञान ना, अब तो मेरी सुधि ले लो ना।

हाय विवशता की चक्की में, हारा ःंस तुमको पाया ना।

कृपा तुम्हारी होवे स्वामी, प्यासा कंठ मिले तब पानी।

*नयनों में प्रभु तुझे बसायें, पार करें भव हो आसानी।*80

जी ले हम छवि को हृदय बसा, ईश्वर होवे तेरी कृपा।

आंसू का अर्धा चढ़ाऊँ मैं, मुझसे ना होना कभी खपा।

मैं चला थका हारा प्रभु जी, न तुमसे मुझको कोई गिला।

तेरी यादों में खो जाऊँ, सुख-दुख जग के सभी भुला।

तुम सकल मही के हो स्वामी, सबको जानो अन्तर्यामी।

प्रभु अन्धाकार को दूर करो, तू ज्ञान दीप दर्शा स्वामी।

मतिमन्द लिये झोली खाली, जीवन में चल-चल मैं उलझा।

अपनी करुणा को तू बरसा, तेरे इंगित को नहीं समझा।

अज्ञानी हूँ तुम क्षमा करो, तुम ना अनाथ प्रभु मुझे करो।

आंसू से पग को धोने दो, भवसागर से तुम पार करो।

क्या चाह करुँ छूटा जाता, ना तोड़ो हरि मुझसे नाता।

गुण तेरे गाते रहे सदा, तुम बिन मोहि कुछ भी न भाता।

बहते आंसू को देख जरा, मुझसे भी तू कुछ प्यार बढ़ा।

चरणों में दास पड़ू तेरे, अपने मंदिर पर मुझे चढ़ा।

बीते जाते जीवन के पल, हिय में तेरा ही धयान करें।

मेरे जीवन की तुम आशा, यह सांस तुम्हारा जाप करें।

नैनन में बस हो छवि तेरी, और चाह ना मेरे स्वामी।

कुछ पल बाकी सुमरण करता, दया करो हे अन्तर्यामी।

इस जग की अन्धाी गलियों में, अज्ञानी हम घूम रहे हैं।

लिये प्यार की तुझसे आशा, तेरी बाट निहार रहे है।

रंग यहाँ बदरंग हुए है, छिपे कहाँ तुम मेरे मोहन।

चरण हमें मिल जाये तेरा, जाय रुल हो मेरा जीवन।

भाग रहे ना ज्ञान हमें है, खोजे कहाँ छिपी है मंजिल।

पलक उठा कर हमें देख लो, मिट जाये तब सारी मुश्किल।

जन्मों से यह प्यासा मनुआ, रोकर तुमको दिल की कह लूँ।

*बस जाओ तुम इन नयनों में, कभी नहीं मैं पलकें खोलूं।*82

चल उड़ चल मन पार गगन के, बीत गया सब जीया धाड़के।

नयना रोवे वह ना आवें, कैसे गाऊँ गीत मिलन के।

बीता बचपन गई जवानी, कहे बुढ़ापा खत्म कहानी।

दो दिन के इस जीवन को ले, पा न सके हरि की नादानी।

जीया कैसे मैं समझाऊँ, बस हरपल मैं नीर गिराऊँ।

बिछुड़ गये हे हरि तुम मुझसे, आऊँगा मैं तुझे मनाऊँ।

किसकी आंखे करे प्रतीक्षा, तू ही ना इस जग में दीखा।

उलझ-उलझ कर सदा गिरा हूँ, तप्त है धारती नाहिं बरखा।

रोये हम तू नहीं पसीजा, तेरी हरपल करते पूजा।

दया करो तुम हमें संभालो, तुम बिन ना है कोई दूजा।

अंखियां हरदम नीर बहाये, तुझको पा भव से तर जायें।

खेले खेल जिय है भटका, करो ईश कुछ तुमको पायें।

कितने रंग यहाँ बिखरे हैं, फिर भी ईश्वर हम रोते हैं।

हुए अभागे बिन हम तेरे, किन सुपनों में हम जीते है।

तेरी दुनिया तू ही जाने, कैसे तुझको हम पहचाने।

दया हमें मिल जाये तेरी, उड़ आते तुम आना लेने।

हम मिले तुमको दिखायें, नीर कितने है गिरायें।

कंठ है अवरु) मेरा, दे दिशा हम तुझे पायें।

चरण में तेरे पड़े हम, प्राण यह तुझे ही टेरे।

मुझ अबल की लाज रख लो, अंधोरा मुझको घेरे।

जानती ना नौका मंजिल, प्रभू तू ही मेरा साहिल।

अश्रु को स्वीकार कर लो, कंटको से हम है घायल।

तेरी महिमा इस जग में, ;षि मुनी सब गा रहे हैं।
सिसकते हम बैठ कोने, अश्रु बहते जा रहे हैं।

इस जग के तुम रचैया, रुठ न डूबे है नैया।

*तुम कृपा करो मेरे प्रभु, मिल जाये तेरी छैंया।*84

तेरे द्वारे हमें संभालो, दया चाहता मेरी सुन लो।

भीगी अंखियां करुँ प्रतीक्षा, सदियां बीती अब तो सुधि लो।

अनजान डगर खोया है पथ, बता हमें काहे को सोता।

विधी न जानूँ तुझे पुकारुँ, याद तुझे कर प्रभु मैं रोता।

जला यह दिल आंखों में आंसू, कभी रुलाता कभी हंसाता।

छला मुझे क्यों तूने निष्ठुर, छिपा कहाँ तू नजर न आता।

जिय उड़ता नहीं ठौर पाता, भटक-भटक कर नीर गिराता।

तुम ना रुठो हे करुणाकर, तुम बिन यह जग मोहि ना भाता।

मेरे रसिया मुझे संभालो, लौट आये जीवन की खुशियां।

कर्मजाल से घिरा हुआ हूँ, काटो उलझी सारी कड़ियां।

बसा हुआ तू हरघट प्रियतम, रोते फिर भी क्यों हम हरदम।

बहते नीर दिखाओ रस्ता, रुके नहीं पाये तुझको हम।

दिशा हमें दो हम तो हारे, गिरते नीर हमें तुम लख लो।

बीत रही जीवन की घड़ियां, करो कृपा अपनी शरणा लो।

85

पार लगा दो नैया राम, द्वार खड़े तेरे राम।

तुम बिन बिगड़े जग में काम, व्याकुल मन सुन ले राम।

तुझे पुकारें मेरे प्राण, ढलती जाती यह शाम।

रुठो ना तुम मुझसे राम, नयना यह बरसे राम।

चहुँ दिशा पागल बन भटकूँ, बस जा तू दिल में राम।

कृपा तेरी होवे स्वामी, दुख मिटते सुख के धाम।

भांति-भांति के रंग यहाँ हैं, सुपने हम रचते राम।

तुझे भूल यहाँ हम रोवें, लाज बचा मेरी राम।

मेरे खेवट नहीं विसार, जीवन प्राण प्यारे राम।

*चढ़ावे हम अंखियों का जल, बालक हम तेरे राम।*86

जगत के रचैया, हमें मफ कर दो।

न कुछ कर सके हम, हमें प्यार दे दो।

बुलाते-बुलाते, रोती है अंखियां।

तुम्हारे बिन प्रभु, लगती है झड़ियां।

तुही सर्वव्यापक, राज्य तुम्हारा।

नहि हमसे रुठो, न कोई हमारा।

दया दान दे दो, खाली है झोली।

तुमको पुकारें, सुन मेरे माली।

तुही ईश मेरा, राह का प्रदर्शक।

जग में भटकते, बचा मुझे सर्जक।

हरि ओम-हरि ओम, जपे प्रभु सदा हम।

मिटे ताप सारे, शरण में पड़े हम।

तुम्हारे हाथों, यह नाव हमारी।

करो पार इसको, हृदय हुआ भारी।

दर पर तेरे ही, बितायें उमरिया।

बस जाना हिय में, वांसुरी बजैया।

जला ज्ञान दीया, चरण को पायें।

जपता मेरा दिल, यह शान्ति पायें।

87

बिनु हरि कृपा नहीं कुछ होई, याद तुझे कर अंखियां रोई।

गिरे प्रभु हम तुम्ही संभालो, मर्म न जान सका है कोई।

बरसे आंखियां रिमझिम रिमझिम, बाट निहारे मिलेंगे रसिया।

उन बिन सूना सूना लागे, किसे कहूँ मैं दिल की बतियां।

शरण पड़ूं मैं तुम न बिसारो, लाज रखो प्रभु मैं हूँ हारो।

बचा मुझे जग की भटकन से, तुम स्वामी मैं दास तिहारो।

खोजे आंखियां तू नहिं पावें, आग विरह की जी को भावे।

भस्म होऊँ इस विरह अग्नि में, जीवन सफल यही हो जावे।

मेरे माली मुझे संभालो, हम है अबल हमें संबल दो।

महके हम तेरी बगिया में, तेरे पथ हमको चलने दो।

88

ले चल नाविक धीरे-धीरे, भुला सकूं गम तेरे पीछे।

लहरों में जिय मोरा कांपे, बिजली कड़के भागूं पीछे।

नहीं सहारा और न पाऊँ, जल अथाह सभी ओर दीखे।

इस सागर से पार करें तू, मग कोई ना मुझको दीखे।

उतर कहाँ नौका से जाऊँ, तुझे न छोडू. आँख न मीचे।

निष्ठुर मत हो मेरे स्वामी, तुझ पग को यह नयना सींचे।

अपना मेरा जोर नहीं कुछ, तेरी करुणा पर निर्भर हूँ।

जीवन की सब खुशी तुझी से, ठुकरा मत मैं तो अनाथ हूँ।

तेरे बिन हम कित जायेंगे, मेरे आंसू को तुम निरखो।

विलग नहीं तुम मुझको करना, कैसे ही तुम मुझको राखो।

मेरे नाविक तुम्हीं सहारे, तू ही मेरा सृजन हारा।

नहीं परीक्षा मेरी तुम लो, हार गया मैं प्रभु जी हारा।

देख रहा कोने में बैठा, अपनी करुणा को वर्षा दो।

जन्म मृत्यु का चक्र मिटे सब, चरणों में रह लेने दो।

89

बोलो अँखियां नीर बहाये, प्यासी धारती प्यास बुझाये।

करुँ नमन कैसे मैं तुझको, अहंकार है मुझे नचाये।

रस तुझ में तेरी बातों में, रो-रो हिचकी मैं लेता हूँ।

डोल रहा इस भवसागर में, नहीं किनारा मैं पाता हूँ।

निशदिन तेरी कथा सुने हम, अंखियां झर-झर नीर गिराये।

व्याकुल मनुआ जान न पाये, हम क्यों इस जीवन में आये ?

उठती गिरती लहरें देखूँ, लहरों से कुछ मतलब समझूं।

नहीं यहाँ कुछ हाथ हमारे, बहना है बस बहना सीखूं।

पीड़ित जग में पीड़ा लेकर, किस-किस की आँखों में झांकू ?

घूम रहे पागल से बनकर, पीड़ा कैसे बता तराशूं ? 90

इस मन को कैसे समझाऊँ, जग में दिल कैसे बहलाऊँ ?

दिल में मेरे आग लग रही, बुझा नहीं अंसुअन से पाऊँ।

तेरी आँखों में ही झांकूँ, तुझसे ही मैं जीवन जानूं।

तुम क्यों बिछुड़ गये हो मुझसे, तुम बिन जीवन जी ना पाऊँ।

स्वयं लाश बन जीवन ढोते, मजबूरी नित रोते रहते।

सुन्दर भी लगते है मुझको, तुम उपदेश बहुत हो देते।

भूखी-प्यासी आँखे लेकर, पचा न पाता पचा न पाऊँ।

पीड़ा के बहते सागर में, मन को धौर्य नहीं दे पाऊँ।

तेरी डाली पर यह बैठे, भटक-भटक हरि क्यों उड़ जाये ?

ऐसा ज्ञान कहाँ से लाऊँ, सदा तुझी में यह रम जाये।

समझ न पाये समझ न पाऊँ, किसे खोजती है यह पीड़ा ?

हँस रोकर सब समय गुजारे, आँख-आँख में छिपी है पीड़ा।

हाथ बढ़ाऊँ हरि झुक जाये, हा तुम तक मैं कैसे आऊँ ?

पैरों में सामर्थ नहीं हैं, उठ-उठ कर मैं गिर-गिर जाऊँ।

जीवन तुझको अर्पण कर दूँ, तुम्हीं गुरु हो तुम्हीं ब्रह्म हो।

धारती की शोभा सब तुम हो, देवों के तुम देव तुम्हीं हो।

तुम्हीं बता दो दुख क्रन्दन को, इस धारती पर कित विसराऊँ ?

मचल रहे अरमान बहुत है, हाय न कर कुछ भी मैं पाऊँ।

नीर गिरे पर कोई न पूछे, धारती पर गिर वह खो जाते।

लपट निकलती पीड़ाओं की, किस सागर में इसे बुझाते ?

मृगमरीचिका में पड़ भागूँ, सिले सब कुछ मैं क्या माँगू ?

पता तुम्हारा मुझको दे दे, किसकी आँखों में मैं झांकू ?

देख-देख कर अब मैं हारा, बस मैं निशदिन घुलता जाऊँ।

भूखा आता भूखा जाता, बता मुझे क्या भेट चढ़ाऊँ ?

मेरी तो तुम एक न सुनते, मनमानी तुम सदा ही करते।

रो-रो कंठ हुआ है सूखा, तेरी सदा प्रतीक्षा करते।

रोती अपनी आँखे लेकर, इस दिल को कैसे बहलाऊँ ?

पथराती जाती आँखे यह, कहो तुझे कैसे रुसलाऊँ ? 91

सुख की खातिर हम भटक रहे, निज के पापों से तड़ रहे।

भयभीत हृदय शंकालू मन, सुपने पल पल में बिखर रहे।

ना क्षुधाा कभी है मिट पाती, सुरसा सी यह बढ़ती जाती।

जलती होली में सुमन खिलें, जग देख-देख कर भरमाती।

हरि हमें सम्भालो अज्ञानी, तुम सा ना कोई भी दानी।

शुभ पथ पर हमें चलाता जा, बहता अंखियों से है पानी।

अनजान डगर जाने ना कुछ, तुम कृपा करो मेरी लो सुधा।

अंखियों से झरझर नीर गिरें, हम बहे जा रहे बीच जलधा।

कैसे पागल मन समझाऊं, नहिं जगत कींच से बच पाऊं।

दिल के देखो हम बुरे नहीं, रो-रो कर कथा यहीं गाऊं।

92

रोता हूँ बस देख लो तुम, इतना मुझको बहुत है।

पग आंसू से सिंचित करुँ, उपहार मेरा बहुत है।

सूख जायें न अश्रु मेरे, मैं बन्दगी करता रहूँ।

चरणों में तेरे मैं गिरा, बस पूजता तुझको रहूँ।

मजबूर हूँ यह जान कर, उपहास नहीं करना प्रभु।

बीतेगा ना जीवन सफर, तेरी दया के बिन प्रभु।

चरणों में तेरे आ गया, अब और कुछ न देखता।

अन्तिम मेरी चाह यही, मिटना ही तुझमें मांगता।

जानता जग में नहीं कुछ, क्रन्दन मैं हूँ देखता।

आये कहाँ से जा रहे, जीवन की लीला देखता।

तू है छिपा किस ओट में, पागल मनू यह ढूंढता।

नहीं भूलना मुझको प्रभु, तेरी कृपा को माँगता। 93

डूबा दिल गम में जाता, क्या किसी से हम कहें।

लिखने वाले लिखते है, नयन रोते ही रहे।

हार मत लम्बा सफर है, पार करनी डगर है।

बहते आंखों में आंसू, जिन्दगी चल रूर है।

तुझे चलना है अकेले, कुछ समय का मेल है।

झमेले कितने हो रहे, पर अकेली राह है।

अश्रु प्रभु आगे चढ़ा दे, याद कर हरि को सदा।

उसकी मर्जी से आये, प्यार से जग कर विदा।

क्या शिकायत है किसी से, सभी अपनी कह रहे।

सुर मिलें जो तुम मिला लो, फिर यहाँ हम ना रहे।

प्यार की हम भूख लेकर, इस जगत में घूमते।

कितनी मजबूरी लेकर, नयन नीर निकालते।

कर सको स्वीकार करना, बने न तेरा गहना।

वासना के तिमिर में ंस, लुट रहे मफ करना।

प्रभु मेरे दिल में आओ, जीय नाहीं लगत है।

प्यास तुम मेरी बढ़ाओ, सुख इसी में लगत है।

नीर पथ को खोजते है, किस तरह पायें तुझे।

तुही सर्जक दया करना, चाह पायें बस तुझे।

लाज मेरी राख लेना, हम नमन करे तुम्हें।

खिलते तुम्हारी बगिया, तुम संभालो प्रभु हमें।

दुख हरन हरि भजन कर, सब गुनों की खान है।

वही सर्जक वही पालक, ज्ञान का भण्डार है।

अपना नहीं कुछ भी यहाँ, सभी कुछ हरि का यहाँ।

मान ले यह जान ले सब, छोड़ कर जाना यहाँ। हरि भजन बिन पार ना हो, डूबेगी यह गगरी।

घूमते इस जगत में हैं, जानते न यह नगरी।

शीश को तू झुकाये चल, वसा हरि हिया अपने।

जाती ले कर यह नदिया, छोड़ो लेने सुपने।

जपो हरि वह ज्ञान देगा, दूर करेगा तम को।

उस कृपा बिन कुछ नहीं है, छोड़ो सारे हठ को।

हर सांस में हरि को भजो, तुझे दे मग जगत में।

वह सर्जक है तुम्हारा, जानो अपने हिय में।

मेल दो दिन का यहाँ, छूटता सब जा रहा।

रंग गया जो श्याम रंग में, भय नहीं कुछ भी रहा।

अश्रु अर्पण करो प्रभु को, उस बिना कोई नहीं।

डगर कितनी ही कठिन हो, पथ हमें देगा वहीं।

खोज उसकी ही यहाँ है, खोजना कुछ और ना।

तुझे डराये आये यम, जगत का कर मोह ना।

दुख गरीबी झेल कर भी, याद कर सुख खान है।

डूब जाये हरि भजन में, दुख नहीं फिर पास है।

95

गुन तेरे गाते रहे सदा, बीत सुर जाये जीवन का।

आंसू से भीगे जो नैना, तू ही चैना मेरे दिल का।

प्राण पुकारें आ जाओ तुम, रोते हैं यह मेरे नयना।

तेरे बिन सब सूना लगता, कैसे बीतेगी यह रैना।

तेरे बिन तड़े ना आये, अंखियां मेरे आंसू आये।

जग के वैभव नहीं सुहाये, दया करो जिय भर-भर आये।

अनजान डगर पथ ना जाने, मिट जायें कब यह ना जाने।

प्रीति डोर में हम बंधा कर प्रभु, यह पार करें भव तू माने।

तेरी कृपा मिले तो स्वामी, ₹ूल बने कांटे पथ देवे।

जीवन की बस चाह यही है, चरणों को प्रभु तेरे पावे। 96

हरि इस जगत में बहुत भटका, नीर आँखों का न सूखा।

बन कर भिखारी द्वार पर हूँ, बन चुका मैं हार रुखा।

हरि प्यार से तुम हाथ रख दो, तुम क्षमा का दान दे दो।

हम तो रहे अज्ञान में है, निज करुणा को हमें दो।

तुम ही सृजनकर्ता प्रभु हो, भूल जाओगे हमें क्या ?

नहीं बना तू अनाथ स्वामी, तुम बिना जीवन भी है क्या ?

मैं बढ़ रहा तुझ ओर हूँ प्रभु, अब न मुझको रोक लेना।

तेरे चरण में गिर पड़ा प्रभु, आंसू यह बहने देना।

प्रभु तुम कहाँ पर छिप गये हो, नयन मेरे रो रहे है।

प्रभु ना करो ऐसा जुल्म तुम, ना यहाँ कोई रहे है।

खोया अतीत मेरा सारा, वर्तमान में मैं हारा।

भविष्य की जानता नहीं मैं, तुम बनो मेरा सहारा।

यह नयन पथ मेरा निहारें, तू हमें काहे विसारे।

हम तेरी कठपुतली ईश्वर, चल न पाये विन सहारे।

यह सृष्टि सारी सिर झुकाये, ईश तुझ सम्मुख खड़ी है।

अश्रु पूरित नयन देंखे, नाचती सारी मही है।

हरि दर्द तेरा है अनूठा, जाम तू हर पल पिला दे।

ना विसर जाये कभी तू, और सुधिा सारी मिटा दे।

दास हूँ ईश्वर तुम्हारा, ना मुझे दुत्कार देना।

जन्मों से प्यासी यह अंखिया, ना झड़ी को रोक देना।

निशदिन तेरी छवि को निरखूं, इनको अब ना तुम तरसाओ।

जन्म-जन्म की प्यासी आंखियां, हरि मेरे नैनन बस जाओ।

हरपल नाम जपूं सुख पाऊँ, जीवन की सब चुभन मिटाऊँ।

तेरे इंगित पर सब होता, तुझसे विलग नहीं हो पाऊँ। ;षी-मुनी सब हारे तुझसे, याद तुझे कर आंसू ढरते।

भूल ना जाना अबल प्रभु हम, चाह यही हम तुझको पाते।

जो कुछ कहूँ यहाँ सब कुछ लघु, तुम अनन्त के स्वामी हो प्रभु।

दिल के जख्म दिखायें किसको, तुम्हीं सुनोगे आस यही प्रभु।

अन्धाा देखे लंगड़ा भागे, तुझ कृपा को जीवन तरसे।

सूखी खेती भी लहराये, पतझड़ में भी सावन बरसे।

हे ईश्वर सामर्थ नहीं कुछ, जो तेरी चौखठ पर आये।

बने विवश हम तुझे निहारें, बस अपने आंसू ढरकायें।

जल में मछली जी भर नाचे, बिन जल वह प्राणों को त्यागे।

तू ही प्राण हमारा जल है, जीते तुझ बिन बने अभागे।

जित देखूँ बस तुझे निहारुँ, जीवन की बस डगर सवारुँ।

दो पल के इस जीवन में प्रभु, नहीं तुझे मैं कभी विसारुँ।

तुझ चरणों में पड़ा रहूँ मैं, दास तुम्हारा ना ठुकराना।

हारा थका मुसाफिर हूँ मैं, न मेरा अब कोई ठिकाना।

करें अर्चना नीर गिरें यह, धूप दीप नैवैद्य नहीं है।

आंखियां झरती बस झरने दे, जीवन का सौंदर्य यही है।

तुम बिन नहीं कोई सहारा, नैया पार करो मैं हारा।

कट जायें यह काली रातें, अपना दे दो हमें सहारा।

मंगलकर्ता दुःख के हर्ता, सारे जग के तुम हो भर्ता।

तुही बचाये भटके को प्रभु, रो-रो शरणा तेरी पड़ता।

कुछ ना जाने रोना जाने, पीड़ा को बस माता जाने।

दूधा पिला सुख नींद सुलावे, दुख शिशु का वह ही पहचाने।

जानो अबल नाथ तुम पथ दो, सबके भाग्य विधाता तुम हो।

गिरते नीर राह को देखें, इस जीवन की तुम सुगन्धा हो।

मिट जायें सब दुख के बादल, विलख रहे हम तेरे बालक।

कृपा करो तुम हे दुखभंजक, नाथ बना लो अपना सेवक। ११

मुझ पर दया करो हे हरि तुम, शक्तिमान हो यहाँ अबल हम।

आंखों के आंसू हैं बहते, कर न सकें कुछ विवश हुए हम।

प्यार तुम्हारा प्रभु चाहे हम, पीड़ित मन के कम होवे गम।

अन्धाकार में भटक रहे हैं, आंसू गिरते मेरे रिमझिम।

सांसों में हम तुमको जप ले, जाते पल हम तुझमें रम लें।

दया करो तुम करुणा सागर, हिय में तुमको नाथ बसा ले।

मैं मतिमन्द महाअज्ञानी, बिन तुझ कृपा न बोले बानी।

नयना जल मैं चरण चढ़ाऊँ, कुछ भी पास नहीं हैं दानी।

पाप पुण्य अच्छा है बुरा क्या, कैसे इस बु) से तोलूं ?

पीड़ा के बहते सागर में, रोये जिय दिल तुझको दे लूँ।

सूख गये आंसू ना आये, कौन जिया की प्यास बुझाये ?

द्वारे तेरे खड़े हुए हैं, देखें अँखियां कब तू आये ?

तेरे बालक तुझे पुकारें, जिय ना लागे नयना प्यासे।

तेरे इंगित पर सब चलता, काहे प्रभु जी हुए उदासे ?

अँखियां हरपल बाट निहारें, सुधि ले लो ना हमें विसारें।

पांव पडू जिय भर-भर आये, हमें देख लो तुझे पुकारें।

चले सहारा ले कर तेरा, कहाँ खो गये नहीं सबेरा।

कांटों से पीड़ित यह तन है, हमें बचा लो दुख ने घेरा।

करें अर्चना प्रभु तेरी ही, तुझमें हरदम धयान लगाये।

वर हमको बस यह तुम दे दो, तू ही दुख को दूर भगाये।

100

रोते-रोते ही हमारी, बीतेगी यह जिन्दगी।

ना तेरा दीदार होगा, खुशियां भी न महकेगी।

जन्म ही यहाँ क्यों हुआ है, मुझी से बेका हुआ।

इस विराने में भटक रहे, कोई न अपना हुआ। किसको हम रोकर दिखाये, देखता यहाँ कौन है ?

देखता मैं नभ को थककर, परन्तु वह भी मौन है।

पीड़ा इस दिल में सुलगती, मेरे तन को झुलसती।

देखते ही देखते यहाँ, लुटे सब अंखियां रोती।

चोट खाई हमने तेरी, गीत मेरे रोते हैं।

किस जगह छिप कर हो बैठे, पीड़ जग की सहते है।

डूब जाने दो यह गगरी, तुम बिना क्यों है ठहरी।

नीर गिरते अंखियों से है, प्यास न बुझती हमारी।

देख पल जाते हैं कैसे, ना कभी सोंचा हमने।

क्या प्रयोजन हम लिये यहाँ, देखे निज नये सुपने।

निष्प्रयोजन जब हुए यहाँ, क्यों प्रयोजन खोंजे है ?

इस सृष्टि से स्वरों को मिला, क्यों न खुशियां ढूंढे है ?

पर जिसे खुशियां है कहते, कभी हो पाई अपनी।

ठोकरें खाते रहे यहाँ, आंख में बहता पानी।

प्रीति हरि से यदि बढ़े तो, दूर दुख सारे होवे।

सुख यहाँ के क्षण भंगुर है, न कभी संतोष होवे।

101

जय भोले बाबा तेरी, सुन पुकार बाबा मेरी।

मन्दिर में तेरे आया, रोती यह अंखियां मेरी।

तेरे बिन जिय यह भटके, पाने को चैना तरसे।

कट जाये सारे संकट, कृपा होय मेघा बरसे।

तू दाता मेरा स्वामी, झोली पर मेरी खाली।

आंसू गिरते टप-टप यह, रूठो ना मेरे माली।

दर से नहीं लौट जायें, तेरे गीतों को गायें।

प्यासी यह अंखियां मेरी, अपने हिय तुझे बसाये।

कांटो भरी डगर है मेरी, अनजाना यहां सफर है।

थाम हमें प्रभु तुम लेना, बस मेरी यही विनय है।